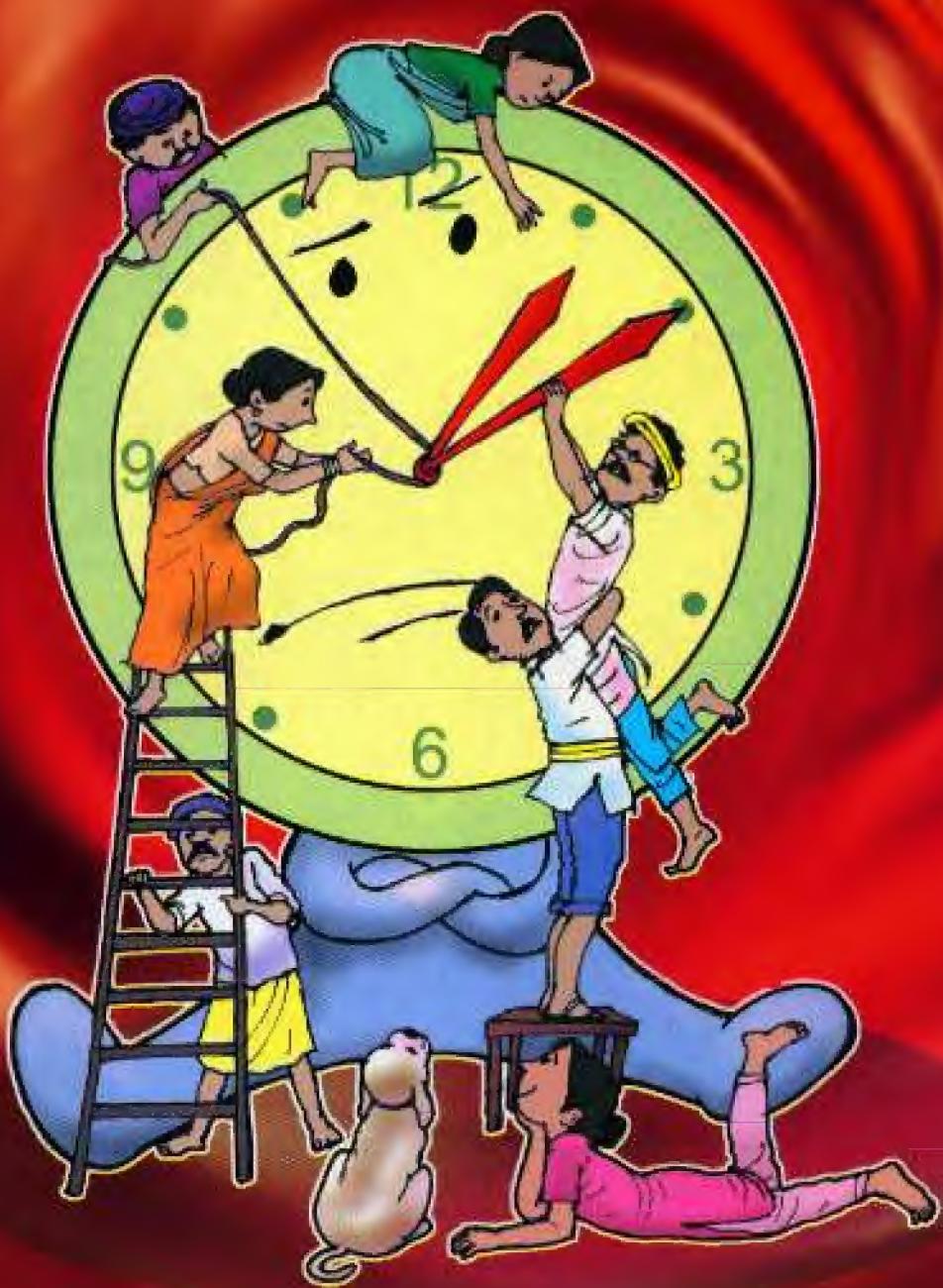


घड़ियों की हड्डताल

ऐशु शानवी



घड़ियों की हड्डाल

रमेश थानवी



राष्ट्रीय शिक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रकाशन संस्करण
दिनांक 2010 मार्च 1931

PD ST MK

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2010

₹. 40.00

एन.सी.ई.आर.टी. कॉर्टरपार्क 80 जो.एस.
एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरुणेश
मार्ण, नवी बिल्डरी 110 016 द्वारा प्रकाशित
तथा बंगला ऑफिसेट कर्स, 335 खड़पुर
गड, करोल बाग, नई बिल्डरी 110005 से
मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-996-3

समाप्तिकार सुरक्षित

- अन्याय की रूप अनुसूति के बिना इस उत्पादन के लिये यह का
उत्पादन एवं अन्यायाली, सार्वजनि, आत्मप्रतिशिव्व, विवरित वाला
लिखित अन्य विषय से दूर; इसके अनुसूति द्वारा उत्पादन वाला
उत्पादन अवैध है।
- इस प्रकाशन को लिखो इस ग्रन्थ के गान्धी की गाँधी विवरणालय की रूप
अनुसूति के बिना यह गुणवत्ता वाले युवा उत्पादन विकास वित्त वंश के अन्य
किसी अन्य उत्पादन से विभाग द्वारा अनुमति नहीं, युवाओंका यह विषय या वान
ही बाहरी, न बिल्कुल अनुसूति।
- इस उत्पादन का महीने सूचक द्वारा दूर है ताकि यह युवा अपना
विवरणालय की गाँधी (बिल्डरी) या लिखित अन्य विषय द्वारा अनुसूति वाला
संशोधित युवा यत्न है यह यानि यही होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्प	को. 011-26362788
को. 011-26362788	को. 011-26362788
100, 100 फौट लंबा	
दृष्टि इस्टर्न, दिल्ली	
कर्मालय ३३ इलेव्न	
कैम्पस ६५० ०११	को. 011-26723748
प्रकाशन दुर्ग यात्रा	
दिल्ली नवीनी	
प्राविदलाल ३६० ०१४	को. 011-27522446
दृष्टि इस्टर्न, दिल्ली	
विक्रम यात्रा द्वारा लिखित	
को. ०११-२६३६२७८८	को. ०११-२६३६२७८८
दृष्टि इस्टर्न, दिल्ली	
कर्मालय ३०० ११४	
दृष्टि इस्टर्न, दिल्ली	
कर्मालय	
कैम्पस ७८१०२१	को. ०११-२६३६२७८८

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	: एव्वेटि राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: शिव कुमार
मुख्य संचारक	: रवींद्र उपल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: गौतम गांगुली
संपादक	: मीरा कात
उत्पादन सहायक	: राजेश पिण्डल

सम्पादन एवं विभागोंका

अभियंता श्रीवास्तव

आवश्यक

जोगेन गिल

अध्याय 1

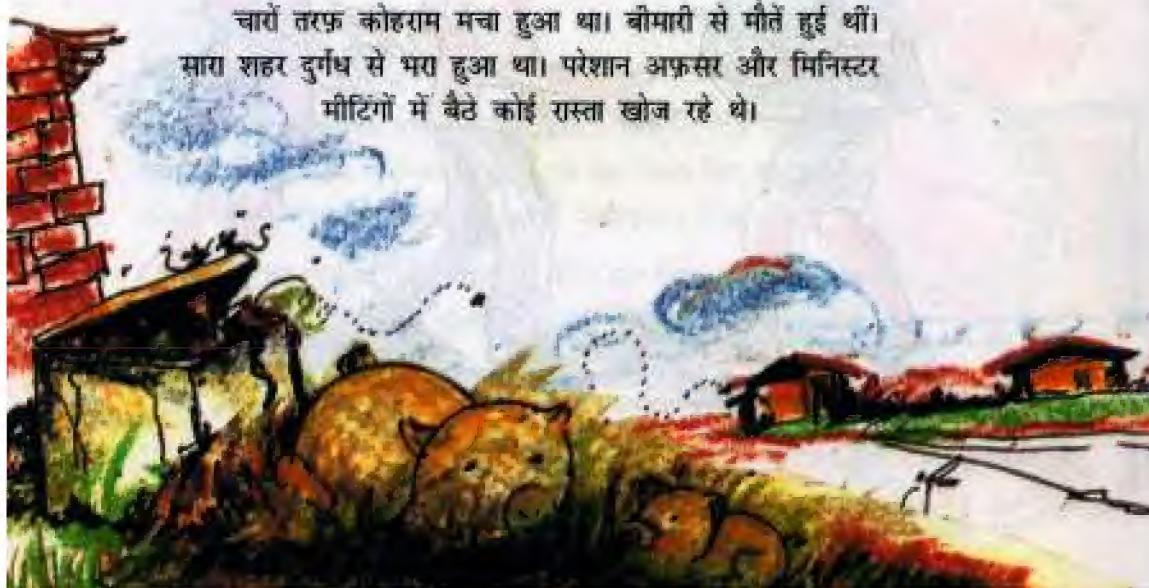


शहर में हड्डताल का मौसम था। रेलवालों ने रेलें चलानी बंद कर दी थीं। हजारों मुसाफिर एलेटफ्रार्म पर अटके पड़े थे। हर दूसरे पल वे एक-दूसरे से पूछते थे—“हड्डताल खुली क्या?” एक हड्डताल खुलने का नाम नहीं लेती थी कि उससे पहले ही दूसरी हड्डताल का नोटिस आ जाता था।

रेलों के बाद सफाई कर्मचारियों का नंबर था। सारे सफाईवाले हड्डताल पर थे। हर गली-कूचे में कूड़े के ढेर लगे थे। चारों तरफ सड़ाध फैली थी। मक्खियों की मौज थी। नालों और गटरों के रुक जाने से मच्छरों को मौका मिल गया था। बीमारियाँ भी शहर पर धावा बोल चुकी थीं। अस्पतालों में मरीजों की लाइनें लंबी होने लगी थीं।

डॉक्टरों ने मिलकर सलाह की कि मौका अच्छा है। हर आदमी हर तरफ जैसे अपनी बात मनवाने की ताक में बैठा था। सभी डॉक्टरों की एक राय थी कि मौका न चूका जाए। डॉक्टर भी हड्डताल पर चल दिए।

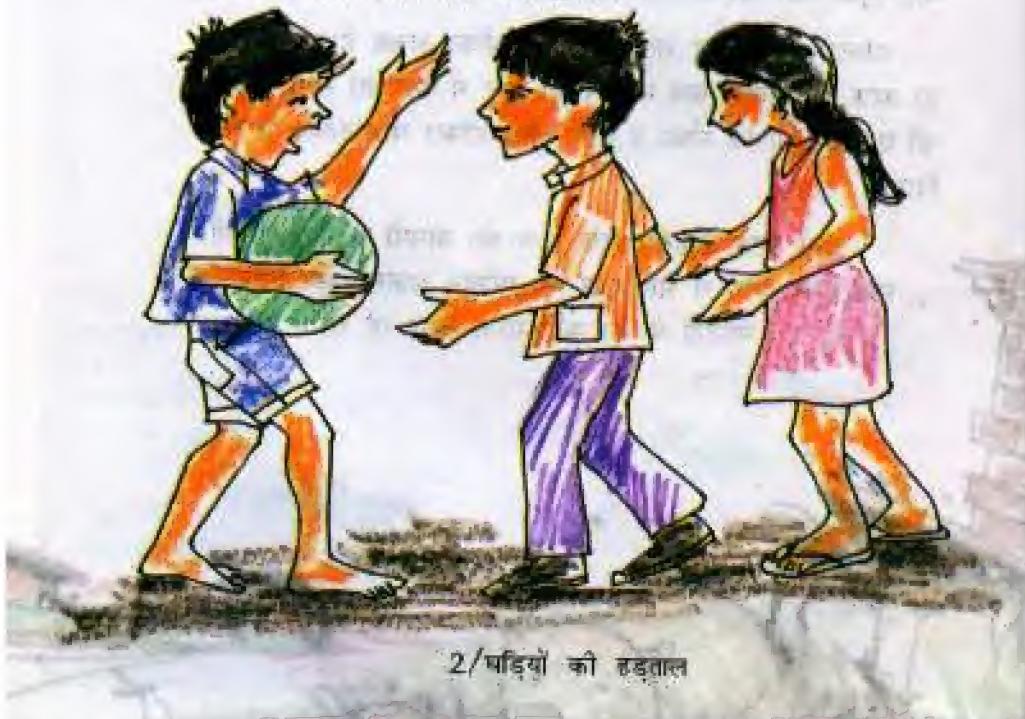
चारों तरफ कोहराम मचा हुआ था। बीमारी से मौतें हुई थीं। साग शहर दुर्घट से भरा हुआ था। परेशान अफसर और मिनिस्टर मीटिंगों में बैठे कोई गस्ता खोज रहे थे।



इधर एक चमत्कार हुआ। खरबूजे को देखकर खरबूजे ने रंग बदला। हड्डाल का मौसम पूरे जोश-खरोश से आ पहुँचा था, इसलिए शहर की सारी घड़ियाँ ने भी आपस में राय मिलाई। सबका मत था कि उनको समय के साथ चलना चाहिए। राय मिल जाने के बाद देर कैसे हो सकती थी। सारे शहर की घड़ियाँ हड्डाल पर जली गईं। समय जहाँ था, वहीं ठहर गया।

जो मिनिस्टर लोग मीटिंगों में बैठे थे, वहीं बैठे रह गए। एक-दूसरे से समय पूछने लगे तो सबने पाया कि सबकी घड़ियाँ रुकी पड़ी हैं। तुरंत दरबान बुलाए गए। सही समय की तलाश में दीड़ाए गए। 'सही समय' लेकिन सबके हाथ से निकल गया था। दरबान भी निशाश होकर लौटे। सबने आकर खबर दी कि सबकी घड़ियाँ उहरी खड़ी हैं।

हुक्म हुआ कि घड़ीसाज बुलाए जाएँ। सरकारी हुक्म सरपट दीड़ा। घड़ीसाज दीड़े आए। खबर लाए कि उनके यहाँ भी सारी घड़ियाँ रुकी हुई हैं। शहर के नामी घड़ीसाज ने घंटाघर के टॉवर पर चढ़कर पेंडुलम हिलाया—धूप के अंदाज से सूई मिलाई और गर्दन ऊँची किए देखता रहा कि सूई आगे सरकती है क्या। सूई जहाँ की तहाँ डटी थी। जरा भी सरकने का नाम न लेती थी।



2/घड़ियों की हड्डाल

इधर समय उहर गया था, उधर फैसले उहर गए थे। मग्नी महोदय एक से दूसरी सभा तक नहीं पहुँच सके। समय के साथ सभाएँ रुक गईं। सभाओं के साथ सफाई कर्मचारियों, डॉक्टरों और रेल बलाज बालों को किस्मत जुड़ी थी, वह भी बही उहर गई।

शहर की घड़ियाँ उहरी लहड़ी थीं। कर्मचारियों की किस्मत रुको पड़ी थी। मगर गली-कूचों में बच्चों की किलकारियाँ छूट पड़ी थीं। सभी बच्चे सुशा थे। सबके चेहरे चमक रहे थे। सब अपनी खुशी बौंट रहे थे। खोटू कह रहा था—

“यार! अपनी तो किस्मत चमक गई। आज दोपहर तक सोते रहे, किसी ने कान नहीं उमेठा। किसी को हमें बगाने की नहीं सूझी। सोते की ऐसी मौज मिल जाए तो फिर क्या!” खोटू अपने सोए रहने की बात बड़ी शोखी से सुना रहा था, मगर मन ही मन घड़ियों को दाढ़ द रहा था। सोच रहा था, घड़ियाँ ऐसे ही रुकी रहें और अपनी सलामत रहें।

खोटू का दूसरा भाई था, खोटू। उसे खेलने का सूख शौक था। वह भी जब से घड़ियाँ उहर गई हैं, तब से घंटों खेलता रहा है। किसी का उसे बुलाने की नहीं सूझती। वह भी अपनी खुशी में लोट-पोट हो रहा था और हाँफूता हुआ बता रहा था—

“देख, देख, अपनी क्या लाइफ़ बनी हैं। मजे से खेल जमा रहे हैं। न मम्मी की आवाज बुलाती है और न स्कूल की घंटी। घड़ियों खेल तो चुप हुई हैं, अच्छों-अच्छों को भी चुप कर दिया।”

“अबै, ज्यादा शान मत मार। खेलने का मौका मिल गया तो अब अपनी ही हाँके जा रहा है।” खोटू का एक दोस्त कह रहा था।

“देख दोस्त! अपने फ़ालतू में नहीं हाँकते हैं कुछ। ऐसा खेल जमाना रहा ना, तो चार दिन बाद अपनी सेहत भी देख लेना। फिर भी लगे कि केवल अपनी ही हाँक रहे हैं, तो कुश्ती में उतरकर देख लेना।”

कुश्ती का चैलेंज सामने आते ही खोटू का दोस्त दुबक गया था। मित्रों की यह मंडली फिर खेलने में मस्त हो गई थी। खोटू के ओर भी बहुत सारे दोस्त ऐसे थे, जिनको स्कूल की घंटी से चिढ़ थी। वे



सब एक जगह आ मिले। सब मिलकर हनुमान जी को नारियल चढ़ाने की योजना बना रहे थे। मनौती मना लेना चाहते थे कि घड़ियाँ रुकी रहें, घटियाँ न बजें।

यह मंडली घंटी के बजने से इसलिए परेशान थी कि घंटी खेल के रंग में घंग डालती थी। फिर जब घंटी की छोट सुनाई देती थी, तो उन्हें मास्टर जी की डॉट याद आ जाती थी। घड़ी की सूई और मास्टर जी की डॉट-डपट में कोई निकट का रिश्ता था। सूई समय से जितनी आगे खिसकती थी, डॉट उतनी ही जोर से पड़ती थी। छोटे-बड़े सभी बच्चे मास्टर जी के गुस्से और उनकी इस डॉट से डरने लगे थे। डॉट का डर इस मंडली पर भी ऐसा सवार हो गया था कि स्कूल से दूर भागना ही सबने अपना अधिकार मान लिया था। सारी मंडली इस बात पर एक राय थी कि 'मास्टर जी अगर ज्यादा डॉटें तो पढ़ो नहीं।'

बड़ियाँ जब से रुकी हैं, तब से मोटू की नींद सलामत हो गई है और खोटू का खेल पवका हो गया है। कहीं कोई रोक-टोक नहीं। किसी की दखल नहीं। तीसरे बच्चे बच्चे छोटगाम। मोटू, खोटू के छोटे भाई। इनको छोटे-छोटे किस्से-कहानियाँ पढ़ने का शौक है। जब उन्हें बड़ियाँ रुकी हैं, तब से अपने घर के एक कोने में दुबके उपन्यास, किस्से-कहानियाँ पढ़ते रहते हैं। स्कूल की लैशारी का तकाजा करना मम्मी भूल गई है। खूब मजे से बंटी तक एक कोने में दुबके पढ़े रहते हैं। न कोई तकाजा, न कोई डॉट-फटकारा। किसी को किसी बात की चिंता नहीं।

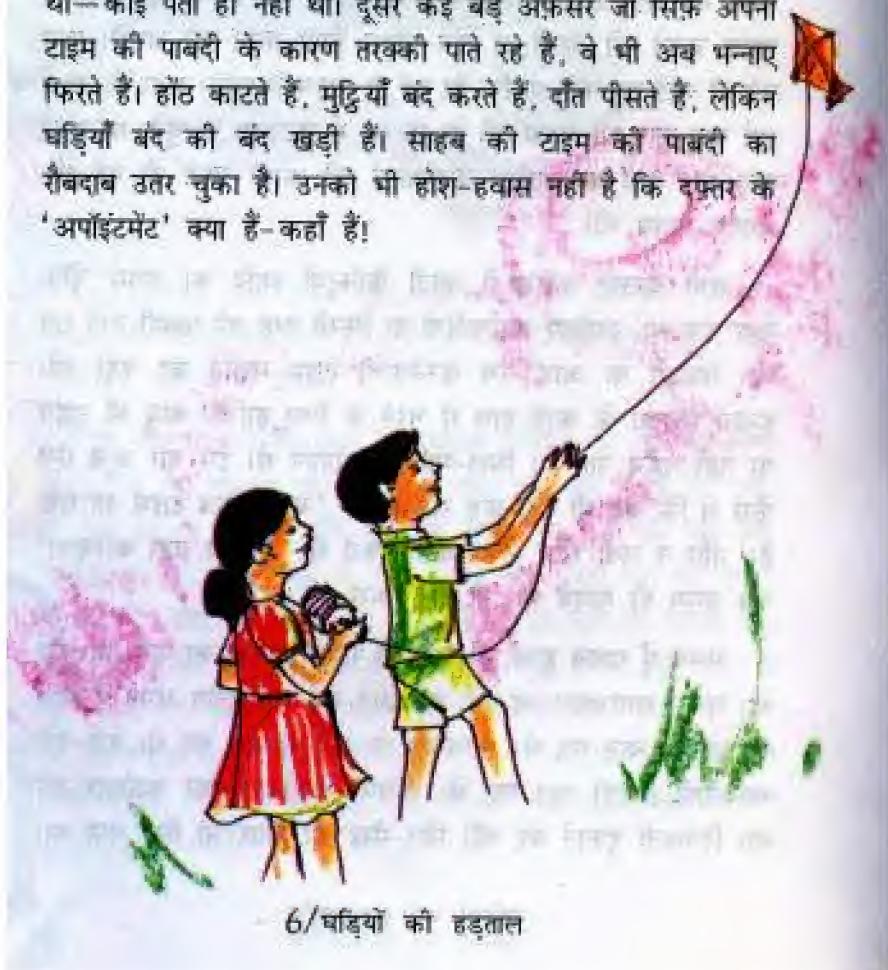
हर समय ऐसा लगता है जैसे सारा घर थोड़ी देर के लिए बैठकर सुस्ता रहा है। मोटू-खोटू दोनों बाहर हैं। इसलिए कोई खटपट नहीं। समय का पता नहीं, इसलिए पापा को दफ्तर की देर का डर नहीं। न नाशता बनाने की जल्दी, न लंब-बॉक्स तैयार करने की जल्दी। पापा को भी कोई डर नहीं था कि देर हुई तो साहब बिगड़ेंगे। शहर के अन्य सारे बाबू लोग भी दफ्तर की देर से बुटकारा पा चुके थे। शहर शांत था। बसों का इंतजार करनेवालों की कतारें छोटी हो गई थीं। भगदड़ गायब थी।

सभी दफ्तरों, कारखानों, छोटी फैक्ट्रियों आदि का समय बूक ठहर गया था, इसलिए कर्मचारियों पर किसी तरह की पाबंदी नहीं रही थी। मजदूरों के कार्ड पंच करनेवाली टाइम-मशीनें बंद पड़ी थीं। हजारों मजदूरों के कार्ड हाथ से भरने के लिए हाजिरी बाबू भी टाइम पर नहीं पहुँच पाते थे। मिल-मालिक परेशान थे। इस बार कुछ ऐसे फैसे थे कि यह भी नहीं कह सकते थे— 'बड़ा खराब टाइम आ गया है।' और न लंबी साँस लेकर कह सकते थे— 'समय बड़ा बलवान।' जब समय ही गायब था, तो दोष किसे देते !

समय यूँ गायब हुआ, तो शहर में सहसा समता का राज आ गया था। सच्चा समाजवाद आ गया था। छोटे-बड़े सभी लोग अपने दिनमान को ढोर से कट गए थे। भाग्यवाद के फदे से बच गए थे। बड़े-बड़े भाग्यवादी हेकड़ी भूल गए थे। भविष्य बेचनेवालों का कारोबार ठप था। दिनमानी दुकानें बंद थीं। मौन-मेख का अंतर भी मिट गया था।

समय उहर गया था। भविष्य की चिंता से लोग दूर थे। घटनाएँ कम हो गई थीं। खबरनवीसों की मुश्किल हो गई थी। न तो खबरें मिलती थीं और न ही किसी की खबर लेने का मौका। नतीजा यह था कि अखबार छोटे हो गए थे। कागज की खपत कम हो गई थी। तंगी मिट गई थी। लेकिन कागज की मिलवाले चिंता में दूब गए थे। साथ ही जंगलात काटनेवाले ठेकेदार और मजदूर भी। सबको कारोबार की चिंता थी।

उधर समय के चूँ गाहब हो जाने से अफ्रसरों, मैनेजरों व मिल-मालिकों की हालत अजीब हो गई थी। एक बड़ी कंपनी के मैनेजर साहब को घड़ी के अलार्म से उठने की आदत थी। घड़ियों सब उहरी खड़ी थीं। इसलिए बेचारों की नींद भी जाने का दृटती थी—कोई पता ही नहीं था। दूसरे कई बड़े अफ्रसर जो सिर्फ़ अपनी टाइम की पाबंदी के कारण तरक्की पाते रहे हैं, वे भी अब भनाए फिरते हैं। होठ काटते हैं, मुष्टियों बंद करते हैं, दौत पीसते हैं, लेकिन घड़ियाँ बंद की बंद खड़ी हैं। साहब की टाइम की पाबंदी का रौबद्ध उत्तर चुका है। उनको भी होश-हवास नहीं है कि दफ्तर के 'अपॉइंटमेंट' क्या हैं—कहाँ हैं!



6/घड़ियों की हड़ताल

जब से समय यूँ नदारद हुआ है—सरकार उदार हो गई है। अफ़सर उदार हो गए हैं। सबको एक-दूसरे की तकलीफ़ का थोड़ा खुशाल आया है। इसीलिए सभी मालिकों, अफ़सरों और सरकार का उदार सलाह से बाकी सारी हड्डालें समाप्त हो गई हैं।

घड़ियों की हड्डाल मगर अटूट है। सारी घड़ियों उहरो खड़ी हैं। सरकार को समझ नहीं आ रहा है कि समय की एकता का राज क्या है? घड़ियों की यूनियन कहाँ है? सरकार के कड़े आदेशों के कारण सरकारी गुप्तचर विभाग पूरी छानबीन के साथ पता लगा रहा है कि घड़ियों की यूनियन का दफ़तर कहाँ है। घड़ियों की यूनियन का नेता कौन है? बहुत छानबीन के बाद सरकार का गुप्तचर विभाग रपट प्रकरता है। रपट में लिखा है—

'सभी ज्ञात सूत्रों की छानबीन के बाद भी हम समय की एकता का राज नहीं जान सके हैं। अपनी सारी खोजबीन के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि घड़ियों की यूनियन अभी तक कभी नहीं बनी है। हमें मालूम हुआ है कि घड़ियों की यूनियन का दफ़तर अभी तक देश के किसी कोने में नहीं खुला है। हमारे विभाग के सभी बड़े अफ़सर समय की ऐसी अटूट एकता का रहस्य नहीं समझ पा रहे हैं।'

गुप्तचर विभाग की इस रपट के बाद गृह मंत्रालय की परेशानी और भी बढ़ गई थी। सरकार लगातार बंद पड़ी घड़ियों को चालू करने की अटकल सोच रही थी। पीछे छूटे समय को लौटा लाने का तरीका खोज रही थी। रात-दिन खोज रही थी।



अध्याय 2

खोजबीन जारी थी। समय गायब था। सभी परेशान थे। मगर समय की खोजबीन में इस बार सभी जुट गए थे। पॉडित लोग, प्रोफेसर लोग, वैज्ञानिक लोग, दिनमानी दुकानों के ज्योतिषी लोग और सौदा-सूत कलेचाले सभी व्यापारी लोग थीं। इस प्रकार सरकार अब अकेली नहीं रह गई थी। जनता का साथ मिला, तो कई अच्छे सुझाव भी सामने आए। एक सुझाव 'घड़ीसाजों की कमेटी' का था।

सुझाव था कि—'सारे देश के घड़ीसाजों की एक राष्ट्रीय कमेटी बनाई जाए। इसी कमेटी को घड़ियों की हड्डताल का कारण तलाशने का काम सौंपा जाए।' सुझाव सभी मंत्रियों व आकसरों को अच्छा लगा था। सबने अपनी सहमति दे दी थी। सारे देश के नामी घड़ीसाजों के नाम आदेश जारी कर दिया गया था—'तुरंत राजधानी पहुँचो।'



सरकारी हुक्म पाते ही सभी नामी घड़ीसाज दिल्ली दौड़े आए। कुछ घड़ीसाज बवरा गए थे कि सरकार ने क्यों बुलाया! उनसे क्या कहसूर हो गया? कुछ घड़ीसाज यह सोचते आए कि सरकार उनकी कारीगरी का कोई इनाम देना चाहती है। एक घड़ीसाज तो यह सोचते आए थे कि राष्ट्रपति भवन की किसी विलायती घड़ी को सुधारने का काम उनको सौंपा जाएगा। लेकिन इतना सभी घड़ीसाज जानते थे कि जैसे उनकी घड़ियाँ बंद हो गई हैं, वैसे ही दिल्ली के साहब लोगों की घड़ियाँ भी बंद हो गई होंगी – शायद तभी सरकार ने उन्हें याद किया है। सरकारी हुक्म का डर फिर भी सबके मन में बैठा हुआ था। सभी निश्चित तारीख पर सरकारी दफ्तर में हाजिर हुए।

सगतपुर के राजमहल का बूढ़ा घड़ीसाज राजधानी पहुँचा था। खैरगढ़ के नवाब का खास घड़ीसाज भी आया था। बजाज, बीकानेर, बनास, बैगलुरु, कानपुर, काठियावाड़, लेह-लद्दाख, नागपट्टम तथा नाथद्वारा के नामी घड़ीसाज भी आ पहुँचे थे। उनकी एक राष्ट्रीय कमेटी बना दी गई। इन घड़ीसाजों के दिल्ली पहुँचने से मालूम हुआ था कि घड़ियों की हड्डाल देश के कोने-कोने में फैल चुकी थी। इसके साथ ही एक अच्छी खबर यह भी थी कि जब से घड़ियों ने हड्डाल की है तब से दूसरी सारी हड्डालें टूट चली हैं। सरकार खुश थी, मगर चिंतित थी कि घड़ियों की हड्डाल को कैसे तोड़े। इनकी यूनियन को कैसे फोड़े? समय की एकता को तोड़ने की अटकल हर अफसर सोच रहा था।

घड़ीसाजों की राष्ट्रीय समिति बन चुकी थी। सरकार का प्रतिनिधित्व घड़ियों के सरकारी कारखाने नेशनल मशीन टूल्स (एन.एम.टी.) के बड़े इंजीनियर कर रहे थे। समिति की सारी बैठकों के प्रबंध ही तुके थे। घड़ीसाजों से कहा गया था कि 'वे घड़ियों की हड्डाल का कारण तलाशो। अपने-अपने घरों में सुधारने आई मरीज घड़ियों के बीच कभी' किसी ने कोई कानाफूसी सुनी हो, तो बताएँ।' सभी घड़ीसाजों से यह भी कहा गया कि 'वे किसी भी तरह पीछे छूट गए समय का लैटलाने में सरकार की भरपूर मदद करें।' सबसे अलग-अलग बयान मौजूद थे।

घड़ियों की हड्डाल/9

सगतपुर से आए बूढ़े घड़ीसाजा ने दुःखी होते हुए अपने राजमहल की रुकी हुई घड़ियों की व्यथा सुनानी शुरू की। सगतपुर के इस राजमहल में तीन सौ तैतीस कमरे हैं, चालीस चौक हैं और चार ऊँचे लंबे घटाघर हैं। इन चारों घटाघरों में चार खिलायती घड़ियाँ लगी हुई हैं। वे पिछले पचास साल से हर मौसम को सहती हुई ज्यों की त्यों ढटी हैं। सही समय के बटे बजाकर सारे शहर को समय की सूचना देती रही हैं। महल के हर कमरे और हर चौक में एक घड़ी टैंगी है। महल में रहनेवाले और काम करनेवाले हर आदमी के हाथ पर एक-एक घड़ी बैंधी है। इस प्रकार सगतपुर के राजमहल में एक हजार एक सौ एक घड़ियाँ हैं, जिनकी देखरेख यह बूढ़ा घड़ीसाजा पिछले चालीस साल से कर रहा है।

सगतपुर के इस बूढ़े घड़ीसाज के बाल पक गए हैं, सारे दौत गिर गए हैं। जब से दौत गिरे हैं, यह घड़ीसाज सिर्फ यह सोचता रहता है कि कभी दिल्ली जाएगा और नए दौत लगवा लाएगा, लेकिन वह सिर्फ सोचता रहा है। इसलिए मुँह अब भी पोपला है। जिस आँख पर वह काँच पहनता है, वह आँख अंदर गड़ गई है। गालों में गड़ पड़े हैं और चेहरे की चमड़ी झुरियों के कारण लटक गई है, लेकिन आज भी हरेक घड़ी की धड़कन से इसका रिश्ता-नाता चुदा है। वह पूरी आत्मीयता के साथ सारी घड़ियों को संवारता है, साफ रखता है। जब से घड़ियाँ बद हुई हैं, तब से वह बहुत दुःखी है। उसने एक-एक घड़ी का हर पुर्जा, हर पेंच ठीक से ठोककर परख लिया है। सभी कुछ सही है, फिर भी घड़ियाँ बद हैं। कारण तो उसने किसी तरह दूँढ़ ही लिया है। अपने बयान में वह कहता है—

“यह तो होना ही था सरकार! एक दिन तो इन घड़ियों को बंद होना ही था। जो इस टेम की इक्कत करते थे, वे तो रहे नहीं। तब फिर आखिर कभी तो उस टेम को भी चला ही जाना था।”

घड़ीसाज हाँफता है। उठाकर एक लंबी सौस लेता है और आगे बताता है, “साहब! इस महल के घटाघर हर मौसम में बटे बजा-बजाकर बताते रहे हैं कि ‘तुम्हारा समय बीत रहा है’ और यह राजमहल हमेशा चौकन्ना रहा है। प्रत्येक पल की इक्कत करता रहा है। सभी लोगों के

समय का खाल रखता रहा है, उससे बुड़ा रहा है, लेकिन अब कौन जवाबदार रहा है सरकार? अब कौन जिम्मेदार रहा है? आज पल और घहर में कहाँ कोई फ़र्क रहा है सरकार? आज जनता के दिनमान की किसे फ़िक्र है सरकार? अपनी ही जनता से पूछ यह राजमहल एक भुतहामहल बनकर खड़ा है सरकार!"

कहते-कहते घड़ीसाज रो पड़ा था। उसके दिमाग में एक साथ बीते दिनों की याद कौध गई थी और अब जो कुछ घट रहा है, उसे बरदाशत करना उसके लिए मुश्किल हो गया था। उसके लिए यह बरदाशत करना मुश्किल था कि शहर सगतपुर का समय चुपचाप हाथों से सरक जाए और किसी को इसका भान ही न रह। न ही इस राजमहल की घड़ियों से यह अपमान सहा जा रहा था। बूढ़ा घड़ीसाज बता रहा था, "एक रात तो यह तमाशा भी दखना पड़ा कि सरकार, छोटे कुँवर साहब की कार कहाँ से लौटी थी। तभी घड़ियों ने रात के दो बजाए। सारी घड़ियों एक साथ दो के घटे बजा रही थीं। कुँवर साहब का नशा तोड़कर सुना रही थी कि 'यह घर सौटने का समय नहीं है कुँवर साहब!' घड़ियों का चेतावनी कुँवर साहब को अच्छी नहीं लगी। उन्होंने दूसरे सबसे ही सूरजपोल (मुख्यद्वार) की घड़ी उतरवा दी। सारी घड़ियों ने इसे अपनी तौहीन समझा था।"

घड़ीसाज फिर किसी पीड़ा के दबाव से दब गया था। थोड़ा ठहरकर कहने लगा था, "दूसरे ही सबेरे मैंने सुना कि मेरे कमरे को घड़ियों कानाफूसी कर रही है, एक-दूसरे से कह रही हैं कि 'अब हमारा समय बीत गया है, समय की इक्कत उठ गई है।' वे सभी घड़ियों अपनी कानाफूसी के बाद मुझे भी चेतावनी दे रही थीं। कह रही थीं— 'बूढ़े घड़ीसाज, तुम्हारा भी समय बीत गया है। अपने औजार समेट लो और चिस्तर बाँध लो।' मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि कभी मेरी घड़ियों ही मुझसे यूँ किनारा करने को कहेंगी... किनारा करने को कहेंगी... कभी नहीं सोचा था सरकार। कभी नहीं...!"

कहता-कहता बूढ़ा घड़ीसाज बेहोश हो गया था।

घड़ियों की छड़ताल/11

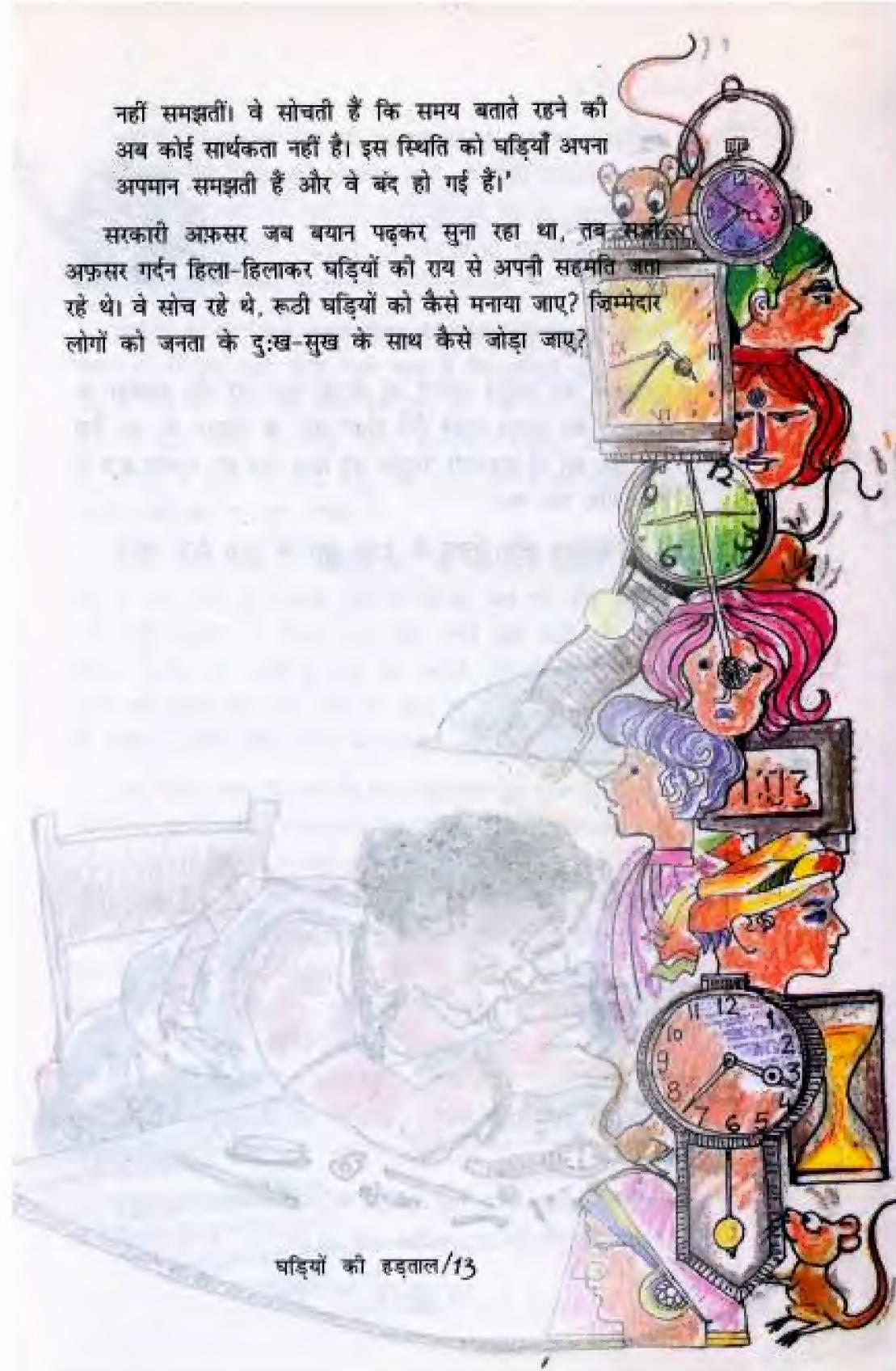


घड़ीसाज का बयान सुन रहे सरकारी अफसर सन रह गए थे। लेहोश घड़ीसाज को तुरंत अस्पताल पहुँचाने के लिए सबसे बड़ा सरकारी अफसर खुद भागा था। उस घड़ीसाज की फीड़ा से सारे अफसर पिघल-से गए थे। वे अब घड़ियों के सवालों से जुड़ गए लगते थे, लेकिन कमेटी की कार्रवाई को आगे बढ़ाने के लिए एक अफसर ने बताया कि उसने सगतपुर के बूढ़े घड़ीसाज का बयान दर्ज कर लिया है। कमेटी के सभी अफसरों ने यह चाहा कि दर्ज हुआ बयान पढ़कर सबको सुनाया जाए। एक अफसर सरकारी रिकॉर्ड से बयान पढ़कर सुना रहा था—

‘सगतपुर में समय की इकजत करनेवाले नहीं रहे। राजमहल के लोग अपनी जिम्मेदारी भूल गए हैं— ऐशोआराम में समय नष्ट करते हैं। राजमहल जनता के समय से, शहर की जनता के दुःख-सुख से बिलकुल कट गया है। सारे शहर का समय इसके शासकों के हाथों से चुपचाप सरकता जा रहा है और किसी को कोई परवाह नहीं है। इसलिए उस राजमहल की घड़ियाँ अब चलना जारी

नहीं समझती। वे सोचती हैं कि समय बताते रहने की
अब कोई सार्थकता नहीं है। इस स्थिति को घड़ियों अपना
अपमान समझती है और वे बंद हो गई हैं।

सरकारी अफसर जब बयान पढ़कर सुना रहा था, तब समझती
अफसर गर्दन हिला-हिलाकर घड़ियों की राय से अपनी सहमति जला
रहे थे। वे सोच रहे थे, रुठी घड़ियों को कैसे मनाया जाए? शिम्मेदार
लोगों को जनता के दुःख-सुख के साथ कैसे जोड़ा जाए?



घड़ियों की हड्डताल /13

अध्याय 3



घड़ीसाजों की गढ़ीय कमेटी की बैठक चल रही थी। सगतपुर के घड़ीसाज का सवाल सामने टैंगी दीवार घड़ी के पेंडुलम पर चढ़ बैठा था। एक बार तो हड्डताली पेंडुलम भी हिल उठा था। सवाल हवा में फिर कीध गया था—

'जिम्मेदार लोग जनता के दुःख-सुख के साथ कैसे जुड़े?'



कमेटी के सरकारी मेंबर भी इन सवालों से जुड़ गए लगते थे। सबके चेहरों पर खिसियाहट छलकने लगी थी। इसी खिसियाहट को छिपाने के लिए सभा की कार्रवाई आणे बढ़ा दी गई थी। सगतपुर के बूढ़े घड़ीसाज का बयान दर्ज हुआ, तो खैरागढ़ के घड़ीसाज को बास आई। उसे बुलाया गया।

खैरागढ़ का घड़ीसाज नवाब साहब का खास घड़ीसाज है। नवाब साहब से ही उसे इतना पैसा मिल जाता है कि उसका और उसके छोटे परिवार का खर्च चल जाए। इसीलिए वह सारे शहर की घड़ियों मुफ्त में ठीक करता है। कभी किसी से कोई मेहनताना नहीं लेता। हर आदमी के हाथ पर बैधी घड़ी उसे अपना हमदम मानती है। हर आदमी को उस पर पूरा भरोसा है।

कारण बहुत साफ़ है। खैरागढ़ का यह घड़ीसाज पिछले पचास वर्षों से इस शहर की घड़ियों सुधारता रहा है। जब भी कोई आदमी नयी घड़ी खरीदता है, इसकी राय कभी गलत नहीं जाती और यही कारण है कि इस कस्बे में कोई भी आदमी घड़ियों के मामले में आज तक कभी ठगा नहीं गया। हर हाथ पर बैधी घड़ी, हर घर में या दफ़्तर में टैंगी घड़ी हमेशा सही समय बताती है।

बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है। इस घड़ीसाज का पूरा परिवार, इस काम को अपना पवित्र कर्तव्य समझकर करता रहा है। घर में पत्नी तथा दो बेटे हैं। सभी मेहनती और काम के जानकार। सबने अपना काम बाँट लिया है। सभी परोपकार और पूजा की भावना से काम करते हैं। उसकी बूढ़ी पत्नी खैरागढ़ की सभी मस्जिदों तथा धर्मशालाओं की घड़ियों सुधारती-संवारती है। बूढ़े घड़ीसाज की बूढ़ी पत्नी मस्दिर-मस्जिद में कोई भेद नहीं समझती। सभी धार्मिक स्थलों का यह समान रूप से पवित्र समझती है। वह समय को धर्मनिरपेक्ष मानती है। अपनी बात का सीधा और सरल प्रमाण उसके पास यह है कि मस्दिर-मस्जिद में टैंगी दो अलग-अलग घड़ियों एक ही समय बताती हैं, कभी कोई फ़र्क नहीं दिखता।

खैरागढ़ के घड़ीसाज के दो बेटे भी यही काम उससे बचपन से ही सीखते रहे हैं। अब वे भी बड़े आलिम हो गए हैं। अपने हुनर



के मास्टर हो गए हैं। अब खैरागढ़ के सभी स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, डाकखानों तथा दूसरे सभी सार्वजनिक स्थानों में टैगी घड़ियों की देखरेख का चिम्मा इनका है। अपने पिता की तरह ये भी पूरे उस्ताद हैं। इस पूरे परिवार की जबरदस्त देखरेख के कारण खैरागढ़ की सभी घड़ियों की सेहत हमेशा अच्छी रहती है। कभी कोई घड़ी खराब होने की हिम्मत नहीं करती। हालत यह है कि जब किसी घड़ी को सुधारे, साफ़ किए बहुत दिन हो जाते हैं, तो घड़ीसाज स्वयं जाकर उसे माँग लाता है तथा सफाई आदि करके वापस दे आता है। कमाल की याददाश्त है इस बूढ़े घड़ीसाज की!

लेकिन जब से घड़ियाँ रुकी हैं, उसका दिमाग चक्कर खा गया है। वह सोच नहीं पाता कि जिस शहर में घड़ियों की सेहत का इतना ध्यान रखा जाता हो, वहाँ की घड़ियाँ एक साथ थूं कैसे रुक सकती हैं?

घड़ियाँ जब से रुकी हैं, तब से ही जैसे इस पूरे परिवार पर कोई आक्रम टूट पड़ी है। सारा परिवार एक-एक घड़ी का एक-एक पुर्जा देखने-परेखने में लगा रहा, मगर घड़ियों के बंद होने का कारण समझ में नहीं आया। घड़ीसाजों का यह पूरा परिवार भी नहीं जान सका कि सारी घड़ियाँ एक साथ क्यों रुकीं? सबकी समझ जैसे मात

खा गई है, लेकिन अब भी पूरा परिवार कारण की तलाश में जु़ूझ हुआ है।

एक दिन उस घड़ीसाज के दोनों बेटे स्कूल से दौड़े आए तभी घड़ियों के बंद होने का कारण दृढ़ लगा। घड़ीसाज को ऐसी खबर नहीं हुई, जैसे अंधे को आँखें मिली हों।

उससे जब सरकारी अफसर ने राजधानी में घड़ियों के बंद होने का कारण पूछा था, तो वह सहमा-सा बताने लगा था। उसे सरकारी पूछताछ वैसे भी अच्छी नहीं लगती थी। वह दबी जाबान में कह रहा था, “मेरी और मेरे परिवार की सेवा में कभी कोई कसर नहीं आई सरकार! हम सब तो पूरी लगन से, मोहब्बत से घड़ियों की देखभाव करते रहे हैं।”

बीच में सरकारी अफसर ने कहा, “हम तुम्हारी गलती नहीं दूँड़ रहे हैं। हम तो समय की एकता का राज दूँड़ रहे हैं। हमें तो समझता है कि सारे देश की घड़ियों ने एक साथ चलना बंद क्यों किया? तभी अगर समझ में आया हो, तो बताओ।” सरकारी अफसर ने कड़ककर पूछा था। घड़ीसाज बता रहा है, “कारण तो मैं खुद दूँड़ रहा था सरकार। मैं भी उतना ही हैरान था, लेकिन अब जो कारण मेरे दो छोटे-छोटे लड़कों ने अपनी छोटी बुद्धि से खोज निकाला है, वह सरकार की बड़ी समझ से बाहर की चीज़ है। न पूछें तो ही अच्छा है।”

सरकारी अफसर ने सामंती रौब से कहा, “तुम बताओ, तुम सभी कुछ माफ़ हैं।” खैरगढ़ के अनुभवी घड़ीसाज को सरकारी अफसर का यह ‘तुम-हम’ अच्छा नहीं लगा, लेकिन वह करता भी क्या? वह बता रहा था—

“साहब! घड़ियाँ तो आदमी ने बनाई हैं। अपनी सुविधा के लिए बनाई हैं। आज ऑटोमैटिक घड़ियाँ भी चल पड़ी हैं और इलैक्ट्रॉनिक घड़ियाँ भी। लेकिन कोई जमाना था, जब या तो धूप-घड़ियाँ थीं या रेत-घड़ियाँ। जो भी हो, आदमी को समय के अंदाज की ज़रूरत थी तो सिर्फ़ अंदाज की ही नहीं सरकार। उसे समय की कीमत पहचानने

की ज़रूरत थी। उसको समय के सही उपयोग की ज़रूरत थी और उसने अपनी सुविधा के लिए घड़ियाँ बना लीं। घड़ियों का काम उसकी सुविधा के लिए उसे सहयोग देना था, लेकिन... लेकिन बात कुछ बिगड़ती जा रही है सरकार। मेरे दो छोटे लड़के बता रहे थे कि खेलगाह के सारे स्कूलों की घड़ियाँ पीछे रहा करती हैं। वे स्कूलों की घड़ियों पर हमेशा अपनी नज़र रखते रहे हैं। उन्होंने देखा है कि घड़ियों तभी पीछे रहती हैं, जब किसी बच्चे को सजा मिलती है। वे बताते हैं कि सभी स्कूलों में ज़रा भी देर से आनेवाले लड़कों की लाइन अलग लगा करती है। यह लेटलतीकों की लाइन कहलाती है। जब तक प्रार्थना होती है, तब तक मास्टरों की ओरें इन लेटलतीकों की खबर लेने को तकती रहती हैं। बच्चों को नफरत से देखती ये ओरें सिर्फ उस अवसर का इंतजार करती हैं, जो बच्चों को सजा देने के लिए होता है। प्रार्थना के बाद इन 'लेटलतीकों' को जितने मिनट की देर हो, उतने मिनट क्लास से बाहर खड़ा किया जाता है। तब तक स्कूल की सभी घड़ियाँ रुकी रहती हैं। इसके अलावा भी जब-जब इन मासूम बच्चों को कोई भी सजा दी जाती है, तब-तब घड़ियाँ



ठिठककर रुक जाती हैं। आपको यह जानकर हँरत होगी कि यह सिलसिला एक अर्से से चलता रहा है, मगर अब लगता है कि यह सब घड़ियों की बरदाशत करने की ताकत से बाहर की बात हो गई है। इसीलिए वे ठहर गई हैं। सजा और समय का मेल घड़ियों का मंसूर नहीं लगता। फिर सजा भी मासूम बच्चों को! घड़ियाँ इसे नहीं सह सकी हैं।"

खैरगढ़ का घड़ीसाज एक लंबी सौंस लेकर रुक गया था। उसने पानी पीना चाहा था। उसे पान की भी तलब हो आई थी। सरकारी दफ्तर का चपरासी दौड़कर पानी लाया था। दूसरा चपरासी पान लेने दौड़ा था। पानी पीकर खैरगढ़ के घड़ीसाज ने अपनी बात आगे बढ़ाई। वह कह रहा था—

"घड़ियाँ बच्चों पर यूँ सवार हो जाएँगी— ऐसा किसने सोचा था सरकार? बच्चे भी अगर फँजी आदमी की तरह पावंद हो जाएँगे, बच्चे क्यों कहलाएँगे? बच्चे केवल बच्चे ही बने रहें, इसके लिए तो उनको समय के इस आतंक से बचाना ही होगा सरकार! ऐसा भी किसने सोचा था कि समय बच्चों पर यूँ सवार हो जाएगा और सारी दुनिया की कल्पी पौध समय से इस तरह डरती रहेगी? यह बात तो सरकार आपके ध्यान में आनी चाहिए थी, लेकिन जब ऐसा होता ही न दीखा तो घड़ियों ने खुद ही फँसला किया। घड़ियों ने अब सारे बच्चों की हँसी-खुशी के लिए न चलने का फँसला किया है। ते तब तक नहीं चलेंगी, जब तक कि फँजी कानून स्कूलों से नहीं हटा जिए जाएँगे, बच्चों पर समय को इस कदर क्रूरता से सवार नहीं होने दिया जाएगा। अब आप ही बताइए सरकार! ऐसी बात कैसे समझ में आएगी आप सबको? कैसे बदलेंगे आप अपना रुख?"

खैरगढ़ के घड़ीसाज का सवाल एक लंबी सिफारिश के साथ एक बड़ी कमेटी में पूछे जाने के लिए खेज दिया गया था। उसका सारा व्यापार एक अफसर ने दर्ज किया था। उस व्यापार का मोटा मुद्दा उसने पढ़कर सुनाया था—

'खैरगढ़ के सभी स्कूलों में देर से आनेवाले बच्चों को सजा मिलती थी। देर एक मिनट हुई है या ज्यादा, वह

कुछ नहीं देखा जाता था। खैरागढ़ की घड़ियाँ मानती हैं कि समय को बच्चों के सिर पर सवार नहीं होना चाहिए। घड़ियाँ यह भी मानती हैं कि जब तक बच्चों को ऐसी छूटा से बचा नहीं लिया जाता, तब तक समय का हिसाब रखना बेकार है। खैरागढ़ की घड़ियों ने फ्रैंसला किया है कि जब तक बच्चों की मुस्कान नहीं लौटाई जाती, तब तक घड़ियाँ बंद रहेंगी।'

खैरागढ़ की घड़ियों का फ्रैंसला सुनकर सभी सरकारी अफसर चकित थे। उन्होंने तुरंत शिक्षा मंत्रालय के नाम एक चिट्ठी भेजी कि घड़ियों के फ्रैंसले पर विचार करने के लिए देश के नामी शिक्षाविदों को बुलाया जाए, एक कमेटी फिर बैठाई जाए और बच्चों पर समय की पांचंदी लागू करने की बात पर फिर से विचार किया जाए।



आठवां शब्दालंकार 4



सरकारी दफ्तर में घड़ीसाजों के बयान चल रहे थे। घड़ियों की हड्डियाँ का कारण समझनेवाली गण्डीय कमेटी की मीटिंग दिन-ब-दिन आगे खिसकती जा रही थी। घड़ीसाजों के लिए बयान नई-नई बातें उभार रहे थे। बयानों से सामने आई बातें चौंकाती थीं। सबके कान खड़े करती थीं। सरकारी अफसर सिर खुजाने लगे थे। अभी तक सामने आए बयानों से साझ था कि घड़ियों की यह हड्डियाँ किसी समझौते से नहीं टूटेगी।

सगतपुर और खैरगढ़ के घड़ीसाजों का बयान हो जाने के बाद एक ऊँचे सरकारी अफसर ने कहा था—“यह मामला काफ़ी बढ़ गया है। अब यह मामूली मामला नहीं रहा है।” तब तक दूसरा अफसर बोला था—“यह दरअसल बहुत बुनियादी सिद्धांतों का मामला बन गया है। जहाँ सिद्धांत आँड़े आते हों, वहाँ कपरी उठापटक से कोई संगठन नहीं फोड़ा जा सकता। हम लोगों को अपनी नीति में कोई बुनियादी फेरबदल करना होगा। तभी समय की ऐसी एकता का रहस्य हम समझ सकेंगे।” यह सुनकर तीसरा अफसर पूछने लगा था—“मुझे तो यही समझ में नहीं आता कि घड़ी के दिमाग में ऐसा कौन-सा पुर्णा होता है, जो इस तरह आदमी के दिमाग की तरह सोच-समझ सकता है।”

“घड़ियों के दिमाग का ही अगर पता लग जाए, तो फिर समस्या ही क्या है—उसे ही निकलवा फेंकेंगे।” एक अफसर का कहना था। “लेकिन उस दिमाग का पता लगा लेने के लिए भी तो दिमाग की ज़रूरत है। वह कहाँ से लाएँगे आप?” सबसे बड़े अफसर ने पूछा था। बड़े साहब के सवाल ने सबको चुप कर दिया था। संकेटरी ने



सवाल किया था— “साब! तौसरा नंबर बजबज के घड़ीसाज का है, उसे बुलाऊँ क्या?”

हुक्म होते ही बजबज का घड़ीसाज अंदर आ पहुँचा था। बजबज कलकत्ता के पास ही एक छोटा शहर है। लेकिन वहाँ से आया यह बंगाली चावू बंगाल की रग-रग को जानता है। उसने बंगाल में चल रहे सेठों के कई कागोबारों में काम किया है। वह चकित है कि सेठों के इन दफ्तरों का हर अफसर कसकर काम लेने और कम-से-कम पैसा देने में उस्ताद है।

बजबज का यह बंगाली चावू भी ऐसे ही एक दफ्तर में काम करता है। इसके दफ्तर में एक चावू खास ड्यूटी पर बैठता है। यह चावू सीधे बड़े साब का आदमी है। जरूरी काम यानी खास ड्यूटी के नाम पर इतना-सा काम कि एक रंगीन ढायरी में रोज़ हर आदमी

के दफ्तर पहुँचने का सही समय दर्ज किया करे। बजबज के सारे दफ्तरों में ऐसे काम के लिए कुछ खास आदमी तैनात हैं। साहब लोगों के ये मुस्तैद सिपाही अपनी दृश्यता लगन से पूरी करते हैं। साहब लोगों की खुशी के बास्तों।

बजबज से आया यह बंगली बाबू पेशे से बाबू है, मगर हुनर से घड़ीसाज। काम का पूरा कारीगर है, मगर इसने कसम खा रखी है कि हाथ के हुनर को कभी बेचेगा नहीं। वह गरीब घर में जन्मा-पहा है और अपने परिवार की सारी पीढ़ियों के लिए सेठों व सूदखोरों को देखी मानता है। इसलिए उसने यह भी कसम खा रखी है कि कभी किसी सेठ या सूदखोर की घड़ी नहीं सुधारेगा। वह सिर्फ मजदूरों की और अपने साथ के लोगों की घड़ियाँ सुधारता है, मुफ्त में सुधारता है। घड़ियों की हड्डताल का कारण खोजता हुआ वह कई बातें सोचता रहा है। अपना बयान शुरू करते हुए वह कहता है, “यह मामला मशीनरी नहीं है। यह एक पॉलिटीकल मामला बन गया है साब बंगली साहब लोगों के लिए किसी की घड़ी कोई मतलब नहीं रखती। वे सबकी घड़ियों के ऊपर एक सिपाही बैठते हैं। एक अफसर अपॉइंट करते हैं। घड़ियों पर आफसरी का मामला बहुत सीरियस है साब!”

बंगली बाबू ऐसी चेतावनी के साथ ही सारा हाल कह सुनाता है। वह बंगल के दफ्तरों के बाबू लोगों की हालत बयान करता है। साफ दिखाता है कि मामूली आदमी का समय कितना सस्ता है और साहब का समय कितना महँगा। वह यह भी शिकायत करता है कि जब एक मामूली कर्मचारी काम के बोझ से दबा गत काली करता रहता है, तब उसका साब उसी समय ऐश में ढूबा होता है। वह काम में हाथ बँटाना तक ठीक नहीं समझता। बयान दर्ज हो जाने पर बंगली बाबू की बात के भी असली मुद्रे पढ़कर सुनाए जाते हैं। बयान में लिखा गया है—

‘पूरे बंगल में व्यापारी दफ्तरों के अफसर अपने भरोसे के लिए टाइमकीपिंग बाबू रखते हैं। यह बाबू साहब की घड़ी के हिसाब से और कुछ अपने मनमाने तरीके से

लोगों के आने का व जाने का समय दर्ज करता है। फिर इसी हिसाब से लोगों की तनख्याह बनती है। घड़ियाँ इसे अपने प्रति अविश्वास मानती हैं। वे यह भी मानती हैं कि समय इतना सस्ता नहीं होता है कि उसे आदमी के खिलाफ खड़ा कर दिया जाए। घड़ियों का कहना है कि घड़ियाँ आदमी को चलाने के लिए नहीं चलती हैं। घड़ियाँ इसे अपना अपमान समझती हैं कि समय की बात को आदमी की पीड़ा और परेशानी से ज्यादा महत्व दिया जाता है। बंगाल की घड़ियों ने एक राय से यह तथ किया है कि जब तक समय को आदमी के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता रहेगा, तब तक घड़ियाँ चंद रहेंगी।'

बजबज के बंगाली बाबू का यह बयान एक विशेष हरकारे के साथ बंगाल के मुख्यमन्त्री को भेज दिया गया। साथ में यह सुझाव भी कि तुरंत स्थिति की जाँच जरूरी है।

घड़ियों की हड्डताल का कारण पता करनेवाली कमेटी की कार्रवाई चल रही थी। घड़ीसाथों के बयान दर्ज हो रहे थे। समय बीतता जा रहा था, परंतु कोई नहीं जानता था कि कितना बीता। लोग सिर्फ़ दिन गिनते थे। सूर्य के उदय होने और अस्त होने का इतजार करते थे। ऐसा लगता था कि लोग घंटों की पहचान को भूलकर



24/घड़ियों की हड्डताल

सिर्फ़ दिन व रात की पहचान से जुड़ गए हैं। दिन-रात की यह पहचान शहरी सेटों व अफ़सरों के लिए नयी पहचान थी, जिन्हे पहले कभी दिन-रात की परवाह भी नहीं रहती थी। वे अब सुर्योदय की प्रतीक्षा करने लगे थे। सूरज से लोगों का रिश्ता एक नयी उम्मीद बैधाता था, लेकिन लगता था कि घड़ियाँ अभी भी निराश हैं। उन्हीं भी उदास हैं। घड़ियों की हड़ताल अभी भी जारी थी।

इस लंबी हड़ताल में मौज मनानेवाले छोटे-मोटे और खादू की मंडली अब करबट बदलने लगी थी। सबकी सेहत सुधरने लगी थी। सबके चेहरे चमकने लगे थे। सबकी आदतें बदलने लगी थीं। बच्चों की बदली आदतों ने बच्चों के माँ-बाप को भी सोचने पर विवश कर दिया था। वे बच्चों की आजादी के अर्थ समझने लगे थे। उन्हें सफ़र में आ गया था कि आशेषित पावंदी बुरी होती है, लेकिन उन्होंने देखा था कि बच्चे खुद अब अपने खेल तथा काम के समय को बीटाने लगे हैं। उसका पूछा उपयोग करने लगे हैं। यह बदलाव माँ-बाप का अच्छा लगा था। आदतों में ऐसा सुधार आने के साथ ही छोटे-मोटे की सारी मंडली कुछ नए सवालों पर सोचने लगी थी। वे सवाल थे— समय बढ़ा या कामज़? समय बढ़ा या आदमी? समय आदमी को बास्ते या आदमी समय के बास्ते? वे सारे सवाल समय को आदमी के खिलाफ़ खड़ा करने से जुड़े थे। बच्चे जैसे बढ़े हो गए थे।

ऐसे सवालों पर छोटी-छोटी बहसें इस मंडली में शुरू हो गई थीं। सभी बच्चों के पिता अब प्रसन्न थे। उनको लगने लगा था कि बच्चे अब सोचने-विचारने लगे हैं। माता-पिताओं और तमाम अधिभावकों ने अब जाकर महसूस किया था कि असली शिक्षा कब और कहाँ शुरू होती है।

अध्याय 5



बच्चों ने महसूस किया था कि वे आजाद हो गए हैं। मगर आजादी अपने साथ अराजकता नहीं लाई थी। उसने हर बच्चे का हौसला बढ़ाया था। विश्वास बढ़ाया था। छोटू-मोटू के सभी दोस्त पहले से ज्यादा जिम्मेदार हो गए थे, लेकिन यह जिम्मेदारी वही थी, जिसे उन्होंने खुद चुना था। इस बार उन्होंने तय किया था कि वे रोज सबसे घूमने जाएंगे तथा हर सबसे सूर्योदय देखेंगे। उनका यह फैसला इस बार लोहे की लकीर हो गया था और हर दोस्त में होड़ लग गई थी कि पहले कौन जगे व किसको कौन जगाए। इस होड़ ने न केवल जगने की बात सिखाई थी, बल्कि जगाने की बात भी सिखाई थी।

एक सबसे खोटू भी जल्दी जगा था। उसे आज जगना बहुत अच्छा लगा था। आज पहली बार उसने सूर्योदय देखा था। उसे सूरज की पहली किरण ने एक नयी बात कहाई थी। और उसे को चीरने की बात। आज उसने अपनी आँखों से देखा था कि सूरज की पहली



किरण धरती से अंधकार की चादर अपने हाथों उधाइती है। पहली किरण रातभर से सोए शहर में एक नदी हलचल पैदा करती है। लोग गुदड़ी छोड़कर सड़क पर निकल आते हैं। धंधे पर चल देते हैं। कोई ठेला लेकर निकल पड़ता है, तो कोई पूजा के फूल लेकर मंदिर चल देता है। आज सबेरे पहली बार खोटू ने भी पूजा तथा काम के इस निकट संबंध को देखा था। रिक्षोवाले के लिए रोजी पूजा थी, यह उसने अपनी आँख से देखा था। उसे समझ में आया था कि जगना पाना है तथा सोना गैंवाना है।

खोटू ने आज सबेरे केवल जगने के अर्थ ही नहीं समझे थे। उसे जगने का सुख भी मिला था। वह आज पहली बार अपने एक दोस्त को जगने पहुँचा था। उसे जगाकर दोनों साथ घूमने निकले थे। दोनों ने सबेरे की हलचल को पहली बार देखा। दोनों ही सूरज की पहली किरण से प्रभावित थे। खोटू ने जगने के इस सुख को अपना सुख माना था। वह जगने तथा जगने में विश्वास करने लगा था। उगत सूरज के साथ उनका यह रिश्ता उसे अच्छा लगने लगा था। उसे लगने लगा था कि बच्चों को उगता सूरज बनना होगा। खोटू के दोस्त भी अब सूर्योदय से पहले घूमने की मंडली में शरीक होने लगे थे। घूमने के साथ-साथ उपयोगी बातों पर सोचने-विचारने लगे थे। इसमें भी आगे का आश्चर्य यह था कि सोच-विचार केवल हवा में नहीं होता था, बाकायदा रोक की पही किताबों या खबरों पर होता था। सोच-विचार की यह बात जिप्पेदारी की बात थी। आगे बढ़ने की बात थी। अपनी जानकारी बढ़ाने की बात थी। अपनी खुशियाँ बढ़ाने व बढ़ाने की बात थी, लेकिन यह सुख उनका अपना सुख था। उन्होंने इसे चुना था और पाया था। बच्चों को लगने लगा था कि उनकी बुद्धि अब बड़ी हो रही है और वे अब कुछ रच सकते हैं। इससे एक विश्वास जगा था।

बच्चों के इस विश्वास ने माँ-बाप को भी नया विश्वास दिया था। छोटू के पिता समझ गए थे कि हड्डबड़ी बुरी होती है। शाति और धीरज की बात बड़ी होती है। वे अब समझ गए थे कि बच्चों की दुनिया एक अलग दुनिया है। लेकिन बच्चों की दुनिया से बड़ियों की

दुनिया का ऐसा निकट संबंध उनके लिए एक नयी खबर थी। जब से घड़ीसाजों के बयान अखबारों में छपने लगे हैं, तबसे सभी परिवारों की घड़ियों की बातों में दिलचस्पी बढ़ गई है। घड़ियों की हड्डियाँ का रोज नया कारण! वे हैरान तो हैं, लेकिन जब से घड़ियों की बात बच्चों से जुड़ी है, तब से इस मसले को लोगों ने एक पारिवारिक मसला मान लिया है। हर घर-परिवार अब घड़ियों की समझ और संवेदना की दाद देने लगा है। हर घर अब दूसरे सबेरे के अखबार का इताजार करने लगा था— घड़ियों की हड्डियाँ का अगला कारण जानने के लिए।

इधर इताजार हो रहा था, उधर बयान चल रहे थे। सारे घड़ीसाज अपने-अपने बयान देने की बारी का इताजार करते थे और अपना नंबर आने पर अपनी पोटली से अच्छा-सा कारण निकालकर परोस देते थे। ऐसा लगता था कि जैसे हर घड़ीसाज के पास कोई नया रहस्य है। इसी रहस्य को जानने के लिए ही समय-भवन के बाहर पत्रकारों की भीड़ सरकारी विज्ञप्ति की प्रतीक्षा करती रहती थी। घड़ीसाजों के बयान की सुनवाई बंद कमरे में ही हो रही थी। सरकार को खतरा था कि समय की एकता का रहस्य कोई दूसरा न जान ले।

समय की एकता का यह रहस्य सरकार के लिए बहुत बड़ा रहस्य बना हुआ था, लेकिन अब तक हुए बयानों ने सरकार को बहुत निराश किया था। ऐसा कोई कारण अभी तक सामने नहीं आया था कि सरकार कोई सीधी कार्रवाई कर सके। न ही कोई ऐसा कारण सामने आ रहा था, जिसका कोई स्थायी इलाज सरकार के पास हो। नतीजतन कार्रवाई को जारी रखना ज़रूरी था। कार्रवाई चल रही थी। समय ठहरा खड़ा था। सरकारी नुमाइदे सरकार की लाचारी पर तरस खा रहे थे।



उप्याय 6



सभी शहरों से आए घड़ीसाज राजधानी में टिके हुए थे। बयान समय-भवन में चल रहे थे। घड़ियों की हड़ताल खुलने के मगर कोई आसार नहीं दीखते थे। घड़ियों को बंद हुए चौंक कई दिन हो गए थे, इसलिए राजधानी की हवा में एक खास तरह का तनाव छा गया था। सड़कों, चौराहों और बसों के चलने व रुकने का सारा नक्शा ही बदल गया था।

समय एक अर्से से नदारद था। इसलिए समय से लोगों को परिचित रखने के लिए नए तरीके निकाले जा चुके थे। सरकार के समय-सूचना विभाग की तरफ से समय बताने के लिए विशेष इंतज़ाम किए गए थे। यह समय-सूचना विभाग घड़ियों की हड़ताल की देन था। एक नया महकमा खुला था। सरकार को भी समय बढ़ा बलवान लगा था और इस महकमे के लिए सारे स्रोत खोल दिए गए थे। महकमा पनपने लगा था। घड़ियों की हड़ताल ने कड़ियों के दिन फेरे थे। सरकारी महकमों में एक स्वभावगत होड़ व ईर्ष्या चलती रहती है। इसी ईर्ष्या ने समय-भवन के निर्माण की माँग रखी थी। माँग मान ली गई थी, क्योंकि महकमा महत्वपूर्ण था। अब दिल्ली में वायु-भवन, कृषि-भवन, उद्योग-भवन व रेल-भवन की कतार में समय-भवन भी खड़ा हो गया था।

जब से समय-भवन बना था, एक नवी राजनीतिक माँग भी बलवती हुई थी। राजनेताओं ने माँग की थी कि एक समय-मंत्री भी नियुक्त होना चाहिए। माँग बाजिब लगी थी, लेकिन समय-मंत्री के बल उसे बनाया जाना चाहिए था, जो समय की एकता का राज जानता हो, जो सही समय को पहचानता हो, जो खोए समय को लौटा

ला सकता हो, जनता को सही समय बौंट सकता हो तथा जो घड़ियों की हड्डियाल तुड़वा सकता हो। इतना समर्थ मंत्री तो मिलना मुश्किल लग रहा था, लेकिन किसी तरह एक मंत्री चुन लिया गया था।

समय-मंत्री ने आते ही घोषणा की कि वे घड़ियों की हड्डियाल को फ़ौरन तुड़वाएंगे तथा गष्ट के सही समय को लौटा लाने का जी-तोड़ प्रयास करेंगे। उन्होंने यह भी घोषणा की थी कि लोगों की विशेष सुविधा के लिए बिना राशन सही समय बौंटने के सभी इंतजाम कर दिए गए हैं। घोषणा सही थी। समय बौंटा जा रहा था।

हर सड़क पर लगभग एक-डंडे भौल की दूरी पर तबू तान दिए गए थे। तबुओं में टेलीफोन से समय की सूचना आती रहती थी और यहाँ बैठा बाबू पूरी उदारता के साथ समय बौंटता था—हर बार एक ही सवाल का जवाब देता था—‘बाबूजी! क्या बजा है?’ समय की सूचना यहाँ समय विभाग से आती थी, और इस विभाग ने आकाशवाणी में कुछ ऐसा प्रबंध किया था कि बी.बी.सी. लंदन से समय की सूचना लगातार मिलती रहती थी। हड्डियाल चौंक देशव्यापी थी, इसलिए समृच्छे देश की सुविधा के लिए आकाशवाणी से हर एक घटे बाद वह सुना जा सकता था—‘ये आकाशवाणी है। इस समय बी.बी.सी. के अनुसार गत के इतने बजे हैं। इसलिए भारतीय समय के अनुसार दिन के इतने बजे हैं।’

सरकारी समय-सूचना विभाग को इस व्यवस्था से लोगों को जाफ़ी सुविधा हो गई थी। यह समय-सूचना विभाग बिलकुल नया विभाग है। इसलिए अभी पूरी फुर्ती से काम करता है। इस विभाग



में इधर जितने नए लोग रखे गए हैं, वे सब घड़ियों की हड्डाल को मन ही मन धन्यवाद देते हैं। इस अवसर पर ही नौकरी लगे बाबू सोच रहे थे कि 'समय पर ध्यान रखना तो सरकार के लिए पहला काम हो गया है। इसलिए यह महकमा अब कभी बंद होने का नहीं।'

इधर इस तरह से समय की जानकारी मिलने पर बूढ़े-बुजुगों के दिमागों में ब्रिटिश राज की याद ताजा हो गई थी। उनको विदेशी चीजों की प्रशंसा करने का एक और तर्क मिल गया था। आकाशवाणी से समय की सूचना सुनकर एक बूढ़ा कारीगर कह रहा था, "अब आखिर तो टेम भी विलायत से मँगाना पढ़ा याकि नहीं? अरे, हमने तो पहले ही कहा था कि जो टेम गोरे के साथ चला गया, वह जब तक आपस नहीं आता, तब तक गुजारा नहीं चलेगा।"

बूढ़ा कारीगर अपने तर्क को मजबूत करता हुआ आगे कह रहा था—“देखो बाबू! देशी और विदेशी टेम में भी रात-दिन का फ़र्क है।”

यह तो सीधे-सारे आदमी की बात थी। उधर जो लोग विदेशी चीजों के इस्तेमाल में अपनी शान समझते थे, उन्हें भी मजा आ गया था। वे कहते फिरते थे कि अब तो समय भी 'इपोटेंड' है। वे सोचने लगे थे कि अब 'इंडियन टाइम' नहीं रहा, इसलिए शायद हिंदुस्तानी कुछ ज्यादा 'पंक्तुअल' हो जाएँगे।



इधर समय जानने के लिए देशी तरीके भी ढूँढ़ निकाले गए थे। जंतर-मंतर की धूप-घड़ियों के मिटे अंकों को वापस उकेरा गया था। इसी धूप-घड़ी के हिसाब से दिल्ली के रीगल बस-स्टॉप की बसें चलने लगी थीं। मद्रास होटल के बस-स्टॉपवालों ने भी ऐसा ही प्रबंध किया था। लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल के दरवाजे के ऊपर लगी धूप-घड़ी के समय से बसें चलने लगी थीं। जंतर-मंतर की धूप-घड़ी पर समय जाननेवालों का ताँता हर बक्त लगा रहता था। इधर लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल के सामने भी हर बक्त समय जाननेवालों की भीड़ लगी रहती थी। कुछ लोग फिर से अपनी घड़ियाँ मिलाते हुए भी देखे जा सकते थे, लेकिन घड़ियाँ लाख मिलाए भी नहीं मिलती थीं। चलने का नाम ही नहीं ले रही थीं। तबुओं में बैठे बालू दिनभर समय बौंट रहे थे।

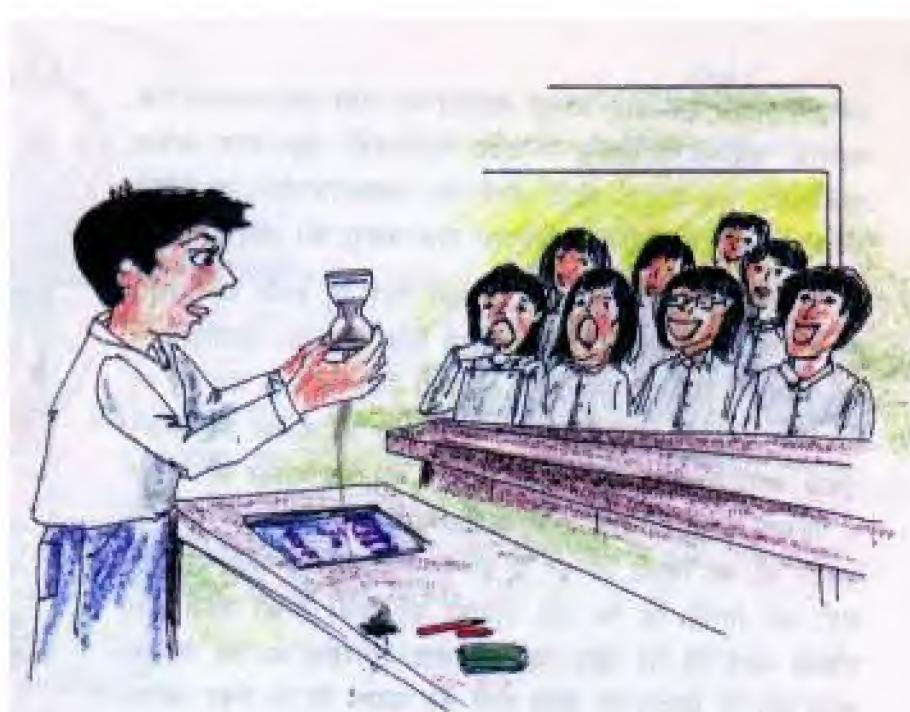
धूप-घड़ी का चलन काफ़ी बढ़ गया था। कई लोगों ने अपनी छतों पर धूप-घड़ियाँ लगाई थीं। मगर इनसे उतना सही समय मालूम नहीं होता था, जितना कि जंतर-मंतर की धूप-घड़ी से। विज्ञान और तकनीकी मंत्रालय ने भी यह फ़ैसला किया था कि वैज्ञानिकों और



न्योतिथियों की एक टीम जयपुर जाएगी। वह टीम पता लगाएगी कि महाराज जयसिंह हिंदुस्तान में और कहाँ-कहाँ जंतर-मंतर बनाना चाहते थे? धूप-घड़ियाँ खड़ी करने का उनका फार्मूला क्या था? मंत्रालय ने आदेश जारी कर दिए थे। टीम जयपुर को चल पड़ी थी।

केवल धूप-घड़ियों के दिन ही नहीं फिरे थे, इनके साथ-साथ रेत-घड़ियों के प्रचलन को भी प्रोत्साहन दिया गया था। अस्पतालों में हर पलंग के सिरहाने एक छोटी रेत-घड़ी फिट कर दी गई थी जो कि नब्ज देखने में नसों की मदद करती थी। स्कूलों का हर मास्टर अपनी कमर पर रेत-घड़ी लटकाएं फिरता था। जब मास्टर जी क्लास में पहुँचते तो सामने रखी मेज पर रेत-घड़ी को ओंधा कर देते थे। मास्टर जी को गिरती रेत दूर से ही दिख जाती थी। मेज पर रखी घड़ी की गिरती रेत पर सारे लड़कों की नज़रें टिकी रहती थीं। सबका ध्यान रेत पर रहता था, इस बात पर रहता था कि रेत के खत्म होते ही क्लास भी खत्म होनी है। मास्टर जी के लिए आशम हो गया था। उन्हें भी समय का पता स्वतः चलता रहता था। बार-बार हाथ उठाकर घड़ी नहीं देखनी पड़ती थी। यह इतनावार नहीं करना पड़ता था कि घंटी कब बजेगी, लेकिन कुछ मास्टर ऐसे भी थे, जो आदतन लाचार थे। हाथ पर घड़ी नहीं, फिर भी हाथ ऊँचा करके समय देखना चाहते थे। जैसे ही हाथ ऊँचा उठता था, क्लास एक जोरदार ठहाके से गूँज उठती थी। मास्टर जी झोप जाते थे। एक लंबी सौंस छोड़कर कहते थे, “पता नहीं कह घड़ियों की हड्डताल भी क्या खुलेगी!”

जब कभी कोई मास्टर जी ऐसी आह भरते थाकि अपनी रेत-घड़ी क्लास में लाना भूल जाते, तो छोटू-मोटू को फिर कोई नयी कारस्तानी सूझती। इधर जब से घड़ियाँ हड्डताल पर बैठी हैं, तब से कारस्तानियाँ कम हो गई हैं। मगर छोटू-मोटू के चेहरे पर एक नयी चमक आ गई है। शरीर में नयी फुरती आ गई है। घड़ियों के बर होने के साथ ही उनकी खिंचाई भी बढ़ हो गई है। उनकी पूरी पलटन इधर-उधर फिरती है। स्कूल के सारे मास्टरों की कमर पर लटकी रेत-घड़ियाँ छोटू-मोटू को और भी मज़ा देती हैं।



खिंचाई बंद होने के बाद मोटू कुछ मुटा गया है। पूरा गोलगप्पा लगाने लगा है। खोटू भी लाल-लाल हो गया है, टमाटर जैसा। दोनों भाइयों के लिए पढ़ाई, स्कूल का काम, गणित के सवाल सभी कुछ एक चुटकी का काम हो गया है। यददाश्त भी जैसे किसी ने शान पर चढ़ा दी हो। बस एक बार कोई पाठ सुना तो सारा का सारा कंठस्थ। खोटू जो अब तक हमेशा पढ़ाई में फिछड़ा हुआ रहा है वह परीक्षा शुरू होते ही हनुमान जी को नारियल चढ़ाने की सोचता रहा है, उसका भी नंबर अब आगे रहता है। स्कूल के मास्टर तान्जुब करते हैं कि यह चमत्कार कैसे हुआ! खोटू-मोटू के पापा भी खुश हैं तथा मम्मी भी उतनी ही खुश, लेकिन हैरत में सभी हैं कि यह परिवर्तन आया कैसे? खेल ही खेल में सब कुछ सीख जाने का राज बना है?

खोटू-मोटू और खोटू के मम्मी-पापा और मास्टर तो इस बात पर तान्जुब कर रहे थे कि पढ़ाई में बिना किसी खिंचाई के, बिना किसी सजा के वे इतने तेज़ कैसे हो गए? उनके लिए यह समझना मुश्किल

था कि सीखने में आजादी के भी कुछ अर्थ होते हैं। लंबी सरकारी नौकरियों ने मास्टरों और माँ-बापों से आजादी का अहसास ही छीन लिया था। उनकी समझ से हर काम केवल हुक्म और ताकत से संभव था। सीखने के सहज स्वभाव को वे भूल गए थे। इसीलिए खोटू-मोटू की आजाद शिक्षा पर उनको ताज्जुब हो रहा था।

मगर खोटू-मोटू और उनकी पूरी मंडली केवल एक तरफ ही तेज़ नहीं हुई थी। शैतानी और कारस्तानी का स्तर भी कुछ कूचा हो गया था। इस तरफ भी इस मंडली का दिमाग पूरी तरह से दौड़ने लगा था। जब सब लोग ताज्जुब कर रहे थे, तभी इस मंडली ने एक नया चमत्कार दिखाने का फ़ैसला किया।

सबने मिलकर यह सलाह की कि मास्टरों की रेत-घड़ियों के बल्ब में छेद कर दिए जाएँ। फ़ैसला होने के बाद देर कैसे हो सकती थी! सारी पलटन फ़ैसले फटाफट लागू किया करती थी।

फ़ैसला लागू किया गया। स्टाफ रूम में रखी रेत-घड़ियों के बल्बों में छेद कर दिए गए। मास्टरों ने घड़ियाँ उठाई, क्लास में चल दिए। घड़ियाँ उलट दी, घायल शुरू किया। नज़र चीच में घड़ी गई, तो बल्ब खाली थे। रेत गायब थी। समय फिर नदारद था। सारी क्लासें एक साथ उड़ाके से गूँज उठी थी। मास्टर लोगों को समझते देर नहीं लगी थी कि शरारत किसकी है।

शरारत काफ़ी बड़ी थी। लेकिन सभी शांत थे। किसी ने किसी को पेशी नहीं बुलाई थी। किसी को सजा नहीं मिली थी। जब से घड़ियाँ बंद हुई हैं, इस स्कूल में सबका गुस्सा गायब हो गया है। स्कूल शांत रहने लगा है। सहनशील बन गया है। मास्टर लोग भी उतने ही प्रसन्न हैं, जितने खोटू-मोटू व उनकी पलटन।



अध्याय 7

घड़ियाँ बंद हुई तो स्कूल के हाजिरी-रजिस्टर भी बंद हो गए। बच्चे देर से आएँ तो किसी को शिकायत नहीं थी। हैंड मास्टर जी भी हैरत में थे कि जो बच्चे हमेशा पढ़ने से मुँह चुराते थे, वे भी पूरे उत्साह से पढ़ने लगे हैं। जो बच्चे सहमे-सहमे व उदास रहते थे, उनके चेहरों पर नयी चमक आ गई है और वे उछलते-कूदते अपनी पढ़ाई का अभ्यास कर लेते हैं। हैंड मास्टर जी के लिए यह भी आश्चर्य की बात थी कि जो मास्टर कभी भी पढ़ाने में सुचि नहीं लेते वे भी बच्चों के साथ खेलने-कूदने लगे हैं और खेल ही खेल में सारे पाठ पढ़ा जाते हैं। ऐसे सभी अध्यापक खुश नज़र आने लगे थे, जो किसी-न-किसी मनमुटाव के कारण मुँह फुलाए फिरते थे। वे अध्यापक जो हमेशा बिना पन के स्कूल आते थे और अनमने भाव से स्कूल में समय काटकर चले जाते थे, अब स्कूल के हर काम



में पूरी रुचि लेते हैं। बच्चों और अध्यापकों में दोस्ती गहरे दो रही है।

स्कूल के वातावरण में दिनों-दिन प्रसन्नता जितनी बढ़ती जा रही है, हैड मास्टर जी की हँसती भी उतनी ही बढ़ती जा रही है। हैड मास्टर जी के साथ डिप्टी इंस्पेक्टर भी हैरान हैं। उनकी हैरानी यह है कि उनके पास इतने लंबे समय से कोई शिकायत नहीं पहुँची है। शिकायतें बंद हुई तो सिफारिशों भी बंद हुई। शिकायतों और सिफारिशों के बंद होने से इफ्टर का वातावरण शांत था। दुखी मास्टरों का तोता थमा हुआ था। आफसर लोग गपशप का समय निकाल लेते थे। एक दिन इंस्पेक्टर साहब और डिप्टी साहब चाय पर बैठकर बात कर रहे थे—

“स्कूलों से कई दिन से कोई शिकायत क्यों नहीं आई है? जिससे भी पूछा है, उसी ने तारीफ करते हुए कहा है कि स्कूल तो आश्रम हो गए हैं। सभी कुछ सुचारू रूप से चल रहा है। आपने इस परिवर्तन का कोई कारण पाया क्या?”

उत्तर मिला—“नहीं साहब! कारण नहीं मिला, लेकिन यह परिवर्तन घड़ियों की हड़ताल के बाद ही आया है।”

“घड़ियों के रुक जाने से मौज मनानेवालों की मंडली बढ़ती तो कुछ समझ में आता। यहाँ तो काम की रफ्तार बढ़ी है। छुट्टी मनानेवाला मूड या इयूटी गोल करने का मूड तो स्कूलों से जैसे रफूचक्कर हो गया है। लगता है, बात कुछ और है। मैं चाहूँगा कि आप एक बार किसी स्कूल का दौश कर आएं और मालूम करो।”

इंस्पेक्टर साहब की बात अपने में सरकारी आज्ञा थी। इसका पालन हुआ। डिप्टी साहब दौरे पर चल दिए। प्रगति के कारण का पता लगाने चल दिए।

डिप्टी साहब बिना किसी खबर के स्कूल में पहुँचे थे, लेकिन सब कुछ व्यवस्थित था, काम चल रहा था। उनके पहुँचते ही हड़बड़ाहट हुआ करती थी। उनके आने की खबर सुनते ही तैयारी शुरू हो जाती थी। बच्चों को बताया जाता था कि इंस्पेक्शन होनेवाला



है। इस बार ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। डिप्टी साहब का आश्चर्य और भी बढ़ गया। उन्होंने हैड मास्टर जी से अपने दीरे का उद्देश्य बताया। हैड मास्टर जी भी हैरान थे, जवाब क्या देते? हैड मास्टर जी ने सुझाव दिया कि स्टाफ की सभा बुलाई जाए। सुझाव का स्वागत हुआ। सभा बुला ली गई। सभा में डिप्टी ने वही सवाल पूछा, “ऐसी शांति, सहयोग और प्रगति क्यों?”

डिप्टी साहब का सवाल सभा में तैर रहा था, लेकिन सभी चुप थे। स्कूल के मास्टर जवाब जानते थे, लेकिन एक नए सवाल में उलझे थे— प्रगति की जाँच की ज़रूरत? जब प्रगति उप हो गई थी, तब किसी ने क्यों नहीं पूछा कि काम उप क्यों है? ऐसा सवाल कई मास्टरों के मन में कुल्हाता रहा था कि डिप्टी साहब ने एक मास्टर जी से जवाब देने को कहा। मास्टर जी सकपकाए, लेकिन जवाब हाजिर था वे कहने लगे—

“ऐसे सुखद परिवर्तन का श्रेय तो घड़ियों की हड्डियाल को है साब। घड़ियाँ बंद हुईं, तो बच्चे समय के आतंक से आजाद हुए। स्टेलरीफों की सजा बंद हुईं, उनकी आदत बदली। स्कूल को घटों के बैंटवारे से मुक्ति मिली। बैंटवारा बहुत बुरी चीज़ है। प्रार्थना, पढ़ाई और खेल का भी घटों में बैंट जाना तो और भी बुरा है।”

बोलते-बोलते मास्टर जी को लगा कि वे कोई ऐसी बात कह रहे हैं, जो बड़े साहब के दफ्तर को बुरी लग सकती है। मास्टर जी स्वभाव से बहुत विनम्र थे, इसलिए पहले ही क्षमा चाहने लगे। उन्होंने क्षमा चाहते हुए पूछा, “कहाँ कुछ बुरा तो नहीं लगा तो माफ़ कीजिएगा, अगर मेरी कोई बात कढ़वी लगे तो। आप अनुमति दें...”

“आप बेधड़क सारी बात साफ़-साफ़ बताइए। इसमें संकोच कैसा!” डिप्टी साहब बोले। मास्टर जी व्याख्या कर रहे थे—

“बैटवारे की बात कह रहा था साब। हमारे स्कूलों में तो प्रार्थना का भी घंटा होता है और खेल का भी घंटा। उद्योग का भी घंटा होता है और श्रमदान का भी घंटा। दरअसल न तो घंटी बजाकर प्रार्थना का हुक्म दिया जा सकता है और न खेल का ही। हम हरान थे कि प्रार्थना और खेल का घंटा क्यों होता है, लेकिन पिछले चिन्हों तो श्रमदान और नैतिक शिक्षा के घंटे भी घंटों की लिस्ट पर चिपक गए। यह हमारी समझ से तो बाहर की ओज़ है कि बिजली की मशीन की तरह आप जो बटन दबाएँ, वही काम होने लगे। दान-दक्षिणा, नाम-धाम तो वैसे ही किसी के हुक्म से नहीं होते, फिर छोटे-छोटे कोमल बच्चे मशीन का बटन दबाते ही प्रार्थना, श्रमदान या खेलना शुरू कर देंगे, यह सोचना तो समझदारी नहीं हुई, लेकिन सरकारी हुक्म था, तो ऐसा होता रहा। मास्टर भौं एसा करते रहे और बच्चे भी बिना मन ऐसा करने को विवश थे। जब से घड़ियाँ रुकी हैं, तभी से बच्चे घंटों के इस बैटवारे से बचे हैं। तभी से बच्चे थोड़ा उन्मुक्त महसूस करने लगे हैं और तभी से खुशियाँ लौटी हैं। खुशियों के साथ उनकी पढ़ाई भी लौटी है।”

मास्टर जी शायद आगे भी कुछ कहते, लेकिन बोच में ही डिप्टी साहब ने पूछा, “तो मास्टर जी! आप क्या अलग विषयों के घंटे भी जरूरी नहीं समझते हैं?” डिप्टी साहब के इस सवाल का जवाब भी हाजिर था। वे बोले—

“अभी जिस तरह घंटों में बैटकर विषय पढ़ाए जाते हैं, वह तो गैरजरुरी हो है। हमें यह हक किसने दिया कि हम यह तथ करें कि

फलाँ कलास के बच्चे फलाँ समय फलाँ विषय पढ़ेंगे। पढ़ाई बच्चों को करनी है। उनकी रुचि का ध्यान रखना भी तो जरूरी है। फिर यह भी जरूरी नहीं है कि सभी बच्चे एक ही समय एक ही रुचि रखते हों। बच्चों को रुचियों का ऐसा स्कूलीकरण कैसे सही कहा जा सकता है? विषयों को सही समझ उस समय आएगी, जब बच्चों को पूरी स्वतंत्रता देकर उस विषय विशेष में उसकी रुचि पैदा करके उसे सीखने में उसकी सही मदद की जाएगी। जब से घंटों का बंधन टूटा है, वही सम्भव होने लगा है। जब जिस लड़के को जो कुछ समझना है, वह खुद आता है, सबाल पूछता है। अपनी मर्जी से जब जो पढ़ना चाहे, पढ़ता है। यह दूसरा कारण है प्रगति का, स्कूल की खुशी का।"

डिप्टी साहब मास्टर जी की बात से प्रभावित थे, उन्हें सारी बात समझ में आ रही थी। उन्हें लगा कि मास्टर जी को शायद कोई तीसरा कारण भी पता है। उन्होंने पूछा, "तो कोई तीसरा कारण भी आप जानते हैं क्या?" मास्टर जी के पास तीसरा कारण भी तैयार था। वे बोले—



"तीसरा कारण मास्टरों की आजादी है। घड़ियों जब से रुकी हैं, हाजिरी-रजिस्टर बंद हुए हैं। इससे पहले दस-पंद्रह मिनट की देरी होने पर मास्टरों के नाम के आगे हैंड मास्टर जी लाल निशान लगाता था। फिर दिन में उनकी पेशी होती थी। उससे बात उलझती थी। गैंडे पड़ते थे। यही गैंडे स्कूल की प्रगति में बाधक थे और यही गैंडे... स्कूल में मनमुटाव की ऐसी गैंडे... और भी गैंडीली होती थीं, जब मास्टर को पेशी बच्चों के सामने चर्चा की बात बनती थी। इसी से मास्टर का उत्साह मारा जाता था। समय पर पहुँचना और पेशी से बचने का डर हर समय उस पर सवार रहता था। अब जब से उस डर से मुक्त मिली है और मास्टर को आजादी मिली है, तभी से प्रगति लौट आई है। उत्साह की आजादी का सबाल भी तो उतना ही बढ़ा था सब।

डिप्टी साहब को सारी बात समझ में आई। बच्चों की आजादी की बात भी समझ में आई। उत्साह की आजादी की बात भी समझ में आई। उन्हें समझ में आया कि सही आजादी आए तो प्रगति अपने आप आती है। उन्हें यह भी समझ में आया कि सही आजादी आए तो आपसी झगड़े खुद-ब-खुद खत्म हो जाते हैं।

डिप्टी साहब सारी बात समझकर बड़े हैरान थे। यही हैरानी साथ लिए वे बड़े साहब के बड़े दफ्तर गए। हैंड मास्टर साहब की हैरानी भी मिटी। उन्हें समझ में आया कि आजादी कितनी अच्छी होती है और समय का बच्चों और मास्टरों पर सवार होना कितना बुरा होता है।

अध्याय ८



राजधानी का बदला हुआ नवशा राजधानी के आकर्षण की बात बन गई थी। दूसरी ओर स्कूलों का बदला हुआ रूप शिक्षा विभाग के लिए सोच-विचार का विषय बना था। शिक्षा विभाग ने इस नए चमत्कार पर शिक्षाविदों की समिति की राय माँगी थी। राजधानी में सब तरफ से आए घड़ीसाजों की टीम के बयान अभी भी जारी थे। सगतपुर, खैरगढ़ व बजबज के घड़ीसाजों के बाद अब बीकानेर के घड़ीसाज का नंबर था।

बीकानेर से आए घड़ीसाज ने सभी घड़ीसाजों को अपनी ओर आकर्षित किया। उसका रूप-रंग भी निराला था और बातें भी निराली थीं। गोलमटोल कद, मोटा पेट, उस पर लटकता मोटा ज्वेऊ, गले में रुद्राक्ष की मोटी माला, गंजा सिर, पीछे लटकती गाँठ वाली मोटी चोटी, गोल चेहरे पर गोल काँच का चश्मा और मुँह में दबाए पान से डभरा दायाँ गाल सभी को आकृष्ट करने को काफी थे। किसी का ध्यान इस पर न जाए, तो उसके हाथ में लटकती तूंबी पर ज़फर जाएगा या फिर उसके कंधे पर लटकते अँगोंहें पर जाएगा, जिसमें दोनों सिरों पर दो बड़ी गाँठें लगी हैं। बीकानेर के ये

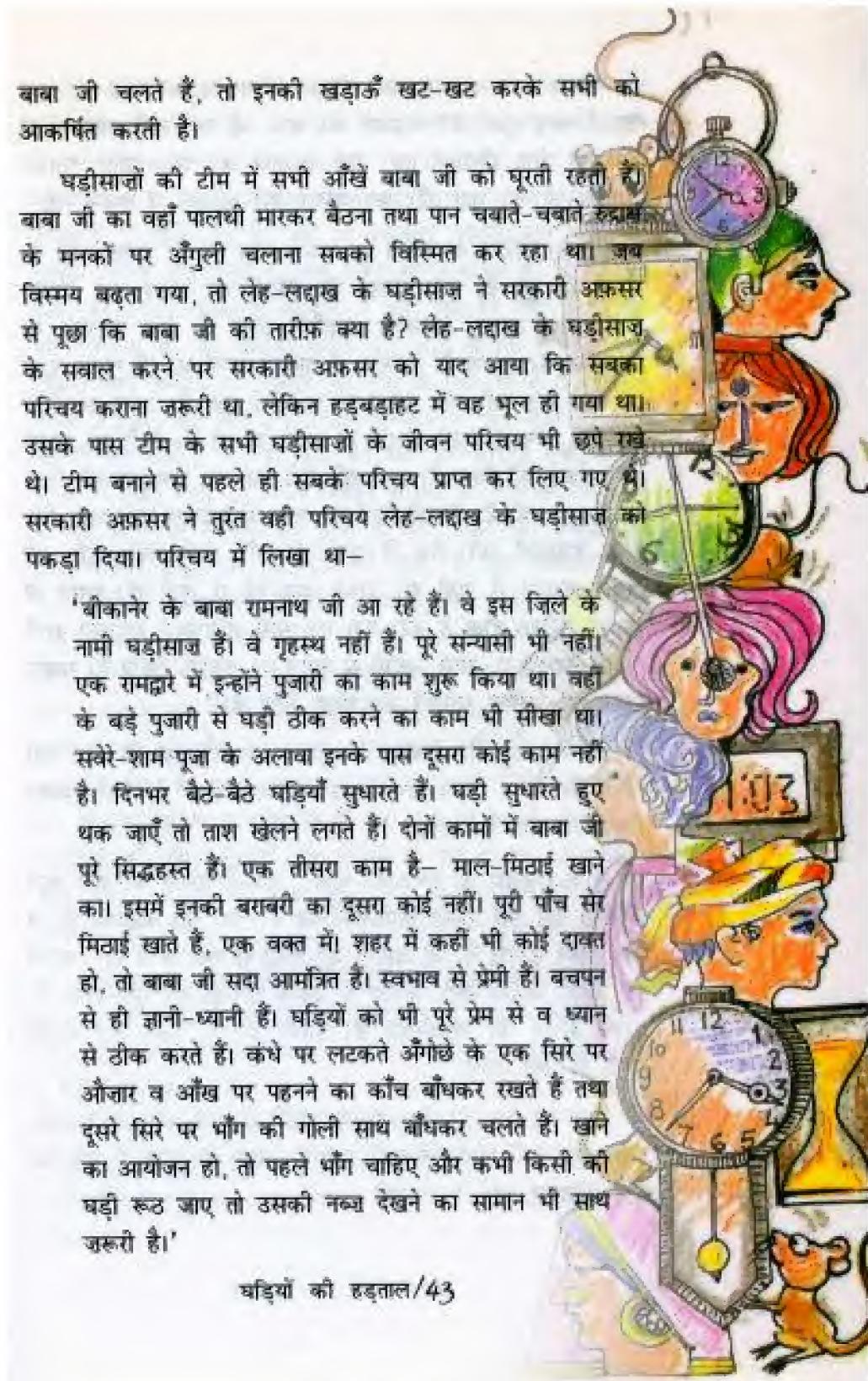


बाबा जी चलते हैं, तो इनकी खड़ाकैं खट-खट करके सभी को आकर्षित करती है।

घड़ीसाजों की टीम में सभी अँखें बाबा जी को घूरती रहती हैं। बाबा जी का वहाँ पालथी मारकर बैठना तथा पान चबाते-चबाते लद्दाख के मनकों पर औंगुली बलाना सबको विस्मय कर रहा था। जब विस्मय बढ़ता गया, तो लेह-लद्दाख के घड़ीसाज ने सरकारी अफसर से पूछा कि बाबा जी की तारीफ़ क्या है? लेह-लद्दाख के घड़ीसाज के सबाल करने पर सरकारी अफसर को याद आया कि सबका परिचय करना ज़रूरी था, लेकिन हड्डबड़ाहट में वह भूल ही गया था। उसके पास टीम के सभी घड़ीसाजों के जीवन परिचय भी छपे रखे थे। टीम बनाने से पहले ही सबके परिचय प्राप्त कर लिए गए थे। सरकारी अफसर ने तुरंत वही परिचय लेह-लद्दाख के घड़ीसाज को पकड़ा दिया। परिचय में लिखा था—

'बीकानेर के बाबा गणनाथ जी आ रहे हैं। वे इस जिले के नामी घड़ीसाज हैं। वे गृहस्थ नहीं हैं। पूरे सन्यासी भी नहीं। एक गमद्वारे में इन्होंने पुजारी का काम शुरू किया था। वहाँ के बड़े पुजारी से घड़ी ठीक करने का काम भी सीखा था। सखेरे-शाम पूजा के अलावा इनके पास दूसरा कोई काम नहीं है। दिनभर बैठे-बैठे घड़ियों सुधारते हैं। घड़ी सुधारते हुए थक जाएं तो ताश खेलने लगते हैं। दोनों कामों में बाबा जी पूरे सिद्धहस्त हैं। एक तीसरा काम है— माल-मिटाई खाने का। इसमें इनकी बराबरी का दूसरा कोई नहीं। पूरी पाँच सेर मिटाई खाते हैं, एक बक्त में। शहर में कहीं भी कोई दाढ़त हो, तो बाबा जी सदा आर्मति हैं। स्वभाव से प्रेमी हैं। बचपन से ही ज्ञानी-ध्यानी हैं। घड़ियों को भी पूरे प्रेम से व ध्यान से ठीक करते हैं। कंधे पर लटकते औंगोले के एक सिरे पर औजार व औंख पर पहनने का काँच बाँधकर रखते हैं तथा दूसरे सिरे पर भाँग की गोली साथ बाँधकर चलते हैं। खनि का आयोजन हो, तो पहले भाँग चाहिए और कभी किसी की घड़ी रुठ जाए, तो उसकी नव्या देखने का सामान भी साथ ज़रूरी है।'

घड़ियों की हड्डताल/43



बीकानेर के बाबा रामनाथ जी का परिचय पढ़कर सभी घड़ीसाज उनकी बात सुनने को उतावले थे। बाबा जी की बारी आई तो वे पान की पीक संभालते हुए, नीचे के हॉठ को थोड़ा कपर उठाकर महात्मा जी की मुद्रा और कथावाचक की आवाज में कहने लगे—

“बेटे! घड़ियों के उहरने का कारण बड़ा गूढ़ है। इसका अर्थ भी उतना ही गूढ़ है। यह समझो कि किसी का समय कब उहरता है?... जब उसका अंतकाल नजदीक आता है। यह कलयुग के अंतकाल का लक्षण है। कलयुग में आदमी कलों का ही गुलाम हुआ हो ऐसी बात नहीं। वह स्वार्थ में अंधा हो गया है। अपने स्वार्थ में सिकुड़ते लोग हर दूसरे आदमी से कटते जा रहे हैं। सभी को अपनी रोटी सेंकने की चिंता है। दूसरे की रोटी का क्या होगा, इसकी चिंता किसी को नहीं है। पिछले दिनों हर शहर में हड़ताल हुई। आए दिन होती हड़तालों की होड़ ने एक भी मौग ऐसी नहीं रखी, जो जनता-जनादर्न से जुड़ी हो। उसके दुख-दर्द से जुड़ी हो। समय तो सबका सरीखा होता है बेटे। देश की सारी घड़ियों ने उहरकर सभी स्वार्थी नेताओं से, आम आदमी से जुड़ने का तकाज़ा किया है। सबके समय को सरीखा समझने का संदेश दिया है।”

सरकारी अफसर ने बीच में पूछा, “आपके शास्त्र तो ऐसा नहीं मानते हैं। वे तो अपने-अपने कर्म की बात करते हैं। फिर सबका समय एक-सा कैसे होगा?”

बाबा रामनाथ जी तमककर बोले, “शास्त्रो-वास्त्रों की बात आप छोड़िए। ऐसे सारे शास्त्र कपोलकल्पित हैं। पंडों की करामत है। वे सारे शास्त्र प्राप्तात् हैं, जो आदमी की पीड़ा से छल करते हैं। आदमी की पहली ज़रूरत रोटी, कपड़ा है, उसके परिवार की सुख-शांति है, उसके बच्चों की मुस्कराहट है। इसके अलावा कोई बात हमारी समझ में नहीं आती।”

बाबा जी पान की पीक धूकना चाहते थे। उठे, इधर-उधर देखा, कोई जगह नहीं दिखी तो वहीं सरकारी दफ्तर के कोने में पान की पीक धूककर आगे कहने लगे—

“हम तो अकेले जीव हैं, फिर भी पेट हमारा सगा नहीं है। मंदिर में रहें चाहे सड़क पर काम करें, पेट को दो जून की रोटी ज़रूर चाहिए। आज समय खुशबू आ गया है। करोड़ों लोग दोनों दानों को मोहताज हो गए हैं। बाजार भाव आसमान चढ़ गए हैं, चौरों भागी तहखानों में पहुँच गई हैं, तब भी रेलवाले अपनी बात करते हैं, डॉक्टर अपनी बात करते हैं, बाबू लोग अपनी सोचते हैं। वे हड्डताल करते हैं। अपनी तनखाबह बढ़वाते हैं और चुप हो जाते हैं। हमारी कौन सोचता है। उन करोड़ों मजूरों की कौन सोचता है, जो कहते नौकरी नहीं करते। उन सबके पेट भी तो रोटी माँगते हैं, लेकिन किसी हड्डताल की माँग उन सबकी ज़रूरतों से नहीं जुड़ी है। आम आदमी की ज़रूरतों से नहीं जुड़ी है। अब जब घड़ियाँ रुकी हैं, तो सभी को पता चला है, समय सबका सरीखा है। अफसर भी हैरान हैं और बाबू भी! मालिक भी हैरान हैं और नौकर भी! ठेकेदार भी परेशान और मजूर भी! दुकानदार भी खफा हैं और खरीदार भी। आज घड़ियों ने ठहरकर तकाजा किया है कि सभी एक-दूसरे से जुड़े, सबकी माँगें सबके लिए हों और सबकी यूनियन एक हो। रोटी-कपड़े का संकट अगर दूर करना है, तो सबको सबसे ज़ह़ना होंगा। संगठन और संघर्ष का दायरा फैलाना होंगा। माँगों की सूची में दरिद्रारायण की माँगों को सबसे ऊपर रखना होगा और उसे हासिल करने के लिए हर तबके के हर आदमी को साथ लेना होगा। घड़ियों का तकाजा, समय का तकाजा है बेटे! तुम भी अपनी सरकार को सावधान कर दो। अफसरों और मत्रियों से कह दो कि आसमान से उतर आएं, आदमी के साथ जुड़ जाएं। इसमें अगर देर की तो परिणाम बुरे होंगे।”

बीकानेर के बाबा रामनाथ ने अपनी बात एक तीखी चेतावनी के साथ समाप्त की थी। अपनी बात कहते-कहते उनका चेहरा हमतम गया था। उनकी चेतावनी सभी घड़ीसाजों को सही लगी थी। सभी उनकी बात सुनकर सिर हिला रहे थे, लेकिन सरकारी अफसर जैसे उनकी ऐसी चेतावनी व 'बेटा-बेटा' कहना अच्छा नहीं लगा था। बाबा जो फक्कड़ थे। उनसे कहा भी क्या जा सकता था। अफसर ने चुपचाप बाबा जी का बयान सरकारी बही में दर्ज किया। उसमें लिख गया कि—

घड़ियों की हड्डताल /45



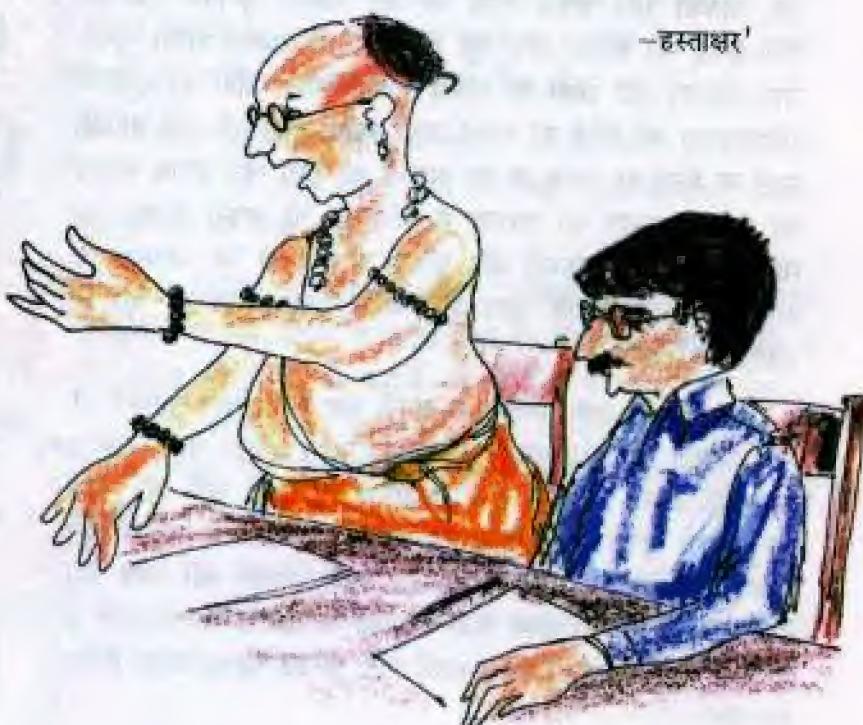
'बोकानेर के बाबा रामनाथ जी, पता नवलनाथ जी का मठ, का कहना है कि घड़ियाँ कहती हैं कि रोटी-कपड़े का संकट यदि दूर करना है, तो सारी यूनियनों को एक होना होगा, सबको आम आदमी से जुड़ना होगा तथा रोटी-कपड़े के संघर्ष में हर तबके के हर आदमी को शरीक करना होगा। बाबा जी ने मंत्रियों और अफसरों को भी चेतावनी दी है कि वे आसमान से उतरें और आदमी से जुड़ें।'

सरकार की बही में बाबा रामनाथ जी के बयान के नीचे यह भी लिखा था—

'विशेष

बाबा रामनाथ जी जनसाधारण के हिमायती हैं। आम आदमी में इनकी आस्था गहरी है। बाबा जी जनांदोलन के भी हिमायती लगते हैं। इन पर नज़र रखना चरूरी है।

—हस्ताक्षर'



बीकानेर से आए घड़ीसाज बाबा रामनाथ का बयान दर्ज हो चुका है। उनसे मिली सूचना की खबर ने सरकारी जासूसों का काम बढ़ा दिया था। जिस जासूस की इयूटी बीकानेर लगी थी, वह खुश हुआ था। उसने सोचा था कि बीकानेर की भुजिया खाने को मिलेगा रसगुल्ले खाने को मिलेगा, लेकिन जब वह बीकानेर पहुँचकर बाबा नवलनाथ जी के मठ पहुँचा, तो बेचारे सरकारी जासूस की सिट्री-पिट्री गुम हो गई। बाबा रामनाथ जी अपने जामाने के नामी पहलबान रहे हैं। उनके पास आज भी कई शागिर्द कुश्ती सीखने आते हैं। उनके शागिर्द ही ऐसे सुंद-मुस्टंड और कदावर हैं कि सरकारी जासूस जैसे चार उनकी बगली में छुप जाएँ। फिर भी जासूस महोदय हनुमान जी के दर्शन के बहाने वहाँ पहुँचने लगे। उनको रामनाथ जी के शागिर्द से पता चला कि बाबा रामनाथ जी अपनी जबानी में मुगदर धुमाते थे पौँच-पौँच सौ दंड-बैटक लगाते थे और खड़े-खड़े पक्का पौँच से धी पी जाते थे। उसने यह भी सुना कि बाबा अब भी अगर किसी को एक धील लगा दें तो उसे दस दिन होश नहीं आएगा। यह सब मुनकर जासूस महोदय हमेशा डरे रहते थे तथा ऐसे मस्तमाला फक्कड़ पर नज़र रखनी फालतू समझते थे। उन्होंने जो रफ्ट रफ्ट थी, उसमें लिख दिया था— 'कहीं कोई खतरा नहीं है।' अपनी रफ्ट के साथ ही उन्होंने अपने तबादले की अर्जी भी खेज दी थी। वे अब सिर्फ तबादले के ऑर्डर का इंतजार करते थे और हर शाम भुजिया-रसगुल्ला खाकर समय काट रहे थे। घर पहुँचने के दिन पिन रहे थे।

घड़ियाँ अब भी बद थीं। रामनाथ जी बयान दर्ज करकर दिल्ली से बीकानेर लौट आए थे। कसरत जारी थी। उधर दिल्ली में उस घड़ीसाजों के बयान चल रहे थे। समय ठहरा था। समय-भवन मगर चल रहा था। यहाँ बयान भी चल रहे थे और फ़ाइले भी चल रहे थीं। समय-मंत्री नए थे। इसलिए वे भी चल रहे थे। वे हर घड़ीसाज के बयान से चौकने हो जाते लगते थे तथा रोज़ एक बक्तव्य दे देते थे— "हम पूरी तरह चौकने हैं, समय को तलाश रहे हैं, जल्दी हो खोज लेंगे!"

अध्याय 9



बीकानेर के घड़ीसाज के बाद बैंगलुरु के घड़ीसाज की बारी थी। बैंगलुरु का घड़ीसाज बाकी घड़ीसाजों की तरह चूदा नहीं था। जबान घड़ीसाज ने शौकिया हांग से घड़ियाँ सुधारने का काम शुरू किया था, लेकिन उसकी लगन और उसकी समझ के कारण उसका शौक उसकी ज़रूरत बन गया था, उसका व्यवसन बन गया था।

घड़ियाँ सुधारते-सुधारते उसे लगने लगा था कि यह काम सबसे पवित्र काम है। यह काम आम आदमी के समय से जुड़ने का काम है। उसे सही समय बताते रहने का काम है। समय की कीमत उसने अच्छी तरह समझी थी। उसके मन में अपने मास्टर जी से बचपन में सुनी बात भी अभी तक बसी हुई थी। उसके मास्टर जी ने अंग्रेजी शब्द 'चॉच' का अर्थ बताया था तथा उसकी व्याख्या की थी।



उसके मास्टर जी ने बताया था, 'वॉच' का अर्थ रक्षा करना है। पहरेदार हमारी रक्षा करता है। इसलिए उसको 'वॉचमैन' कहते हैं। घड़ियाँ भी हमसे महत्वपूर्ण चीजों की रक्षा करने की बात कहती हैं। मास्टर जी की व्याख्या यूँ थी—

W वॉच योर वैल्य

A वॉच योर एसपिरेशंस

T वॉच योर टाइम

C वॉच योर केरेक्टर

H वॉच योर हैल्थ

अपने धन की रक्षा करो।

अपनी इच्छाओं पर काबू रखो।

अपने समय की रक्षा करो।

अपने चरित्र की रक्षा करो।

अपने स्वास्थ्य की रक्षा करो।

अपने मास्टर जी की यह व्याख्या अभी भी उसके दिमाग में उत्तरी हुई थी। वह कई बार 'वॉच' की व्याख्या अपने मित्रों के बीच दोहराता है। उसके मित्र इसलिए उसे मजाक में 'वॉचमैन' कहा करते थे। वह उसके बारे में कहा करते थे, 'वॉचमैन' की बात निराली है। वह तो सभी को 'वॉच' करता है। जब देखो तब यही कहेगा— 'वॉच योर टाइम, वॉच योर केरेक्टर...'

घड़ियाँ बंद होने से पहले ही बैंगलुरु के इस 'वॉचमैन' को यह चल गया था कि घड़ियाँ एक दिन ज़रूर कभी हड्डताल करेंगी। उसने अपने घर में रखी घड़ियों को बातचीत करते सुना था। घड़ियाँ बैंगलुरु में खुले घड़ियों के सरकारी कारखाने के बारे में बात कर रही थीं—

पहली घड़ी—सुना है, अब तो भारत सरकार ने भी आला घड़ियाँ बनाने का कारखाना खोला है। सरकारी कारखाने की इन उम्दा घड़ियों की बिक्री भी खूब हुई है।

दूसरी घड़ी—घड़ियों की बिक्री बढ़ने की बात तो अच्छी है और सरकारी कारखाना उम्दा घड़ियाँ बना लेता है, यह भी बड़ी बात है। सरकारी कारखानों का नफा तो जनता को ही मिलता है। इसलिए यह भी अच्छी बात है कि वहाँ बिक्री बढ़े, लेकिन घड़ियों का सरकारी कारखाना लगने में एक बड़ा खतरा है।

तीसरी घड़ी—कैसा खतरा?

दूसरी घड़ी—सबसे बड़ा खतरा है—समय के सरकारीकरण। खतरा। समय पर सत्ता के अधिकार का खतरा। अभी तो हम सब

पृथ्वी की परिक्रमा के हिसाब से घूमती है, लेकिन फिर खतरा है, सरकारी कानून से चलने का खतरा। सरकार जब घड़ियाँ बनाने लगी हैं, तो संभव है अपने यहाँ बनी सारी घड़ियों के पुर्जों को इस तरह बैठा दे कि वे सरकारी मर्जी के मुताबिक समय देने लग जाएँ। तब सरकारी कानून भी घड़ियों को मानने होंगे। सरकार जब जितना चाहे बजा देने का कानून भी बना सकती है, समय पर सत्ता के ऐसे अधिकार से ही तो जनतंत्र को खतरा है।

दूसरी घड़ी की यह बात सारी घड़ियों को सही लगी थी। सबको यह सब सुनकर चिंता हुई थी। बैंगलुरु के घड़ीसाज पि. बॉचमैन इसी बात से समझ गए थे कि एक दिन घड़ियाँ ज़रूर आंदोलन छेड़ेंगी। हुआ भी ऐसा ही। उसी दिन से बैंगलुरु की घड़ियों को उसने उदास देखा। इसी उदासी के बीच उसने देखा कि घड़ियों की कानाफूसी की आदत बढ़ गई है। यह कानाफूसी दरअसल इसी विषय पर होती थी कि समय के सरकारीकरण का विरोध कैसे किया जाए। क्या कदम उठाया जाए? कोई कदम उठाएँ इससे पहले घड़ियों ने सरकारी कारखाने का हाल जान लेना ज़रूरी समझा। यह काम उन्होंने उसी कारखाने के एक मजुदूर की घड़ी को सौंपा था।

दूसरे दिन नेशनल मशीन टूल्स के मजुदूर की घड़ी ने बताया था— “समय का सरकारी व्यापार दिनोदिन बढ़ रहा है। अब तो



50/घड़ियों की हड्डताल

सरकारी कारखाने ने तारीख वे दिन बतानेवाली ऑटोमैटिक घड़ियाँ भी बना दी हैं।” मजदूर की उस घड़ी ने आगे बताया— “सरकारी कारखाना शुरू हुआ था, सस्ती घड़ियाँ बनाने और उन्हें बाज़िब दाम पर बेचने के लिए, लेकिन अब तो वही कारखाना महँगी घड़ियाँ बनाने लगा। सेठ लोगों वे संपन्न लोगों की शान को ध्यान में रखते हुए सरकारी कारखाने ने सोने की घड़ियाँ भी बनानी शुरू की हैं। इसी बात से उस कारखाने की घड़ियाँ भी दुःखी हैं और वहाँ के मैकेनिक लोग भी। वे सब यह समझ नहीं पा रहे हैं कि समानता लानेवाली और असमानता मिटाने का दावा करनेवाली समाजवादी सरकार ऐसा क्यों कर रही है। सरकारी कारोबार के बढ़ने के साथ ही इस कारखाने की घड़ियाँ और मैकेनिकों की हैरत बढ़ गई है।

यह सब जानकर बैंगलुरु की घड़ियों के सामने यह साफ़ हो गया कि सरकार कभी भी घड़ियों का और समय का सरकारीकरण कर सकती है। बैंगलुरु की घड़ियों के लिए अब इसका विरोध करना भी आसान हो गया था, क्योंकि खुद सरकारी कारखाने में ही असंतोष वा वहाँ की घड़ियाँ भी विरोध की किसी कार्रवाई में शामिल होने को तैयार थीं।

बैंगलुरु के घड़ीसाज के पास यह जानकारी पहले से ही थी। जब घड़ियों की हड्डताल हुई, तो वह समझ गया कि अंततः घड़ियों ने कोई कदम उठा ही लिया। बैंगलुरु का युवक घड़ीसाज घड़ियों की इस सीधी कार्रवाई से खूब खुश था। वह चाहता था कि घड़ियों इस प्रकार मन ही मन न घुटें। वह यह भी मानता था कि आज का दुनिया में अगर कोई सीधी कार्रवाई नहीं करता है, तो सुनवाई संभव नहीं। उसे घड़ियों का डर भी सही लगा था। वह भी घड़ियों को ही तरह परेशान था कि असमानता मिटानेवाली सरकार असमान चीज़ों का उत्पादन क्यों करती है? उनकी बिक्री क्यों करती है? वह सब इन सवालों पर चिढ़ले कई दिनों से सोचता रहा है। घड़ियों के साथ उसका रिश्ता चूंकि नैतिक है, इसलिए घड़ियों की पीड़ा उसकी पीड़ा है। सरकारी बुलावा आने पर उसने तय किया था कि वह पूरी ताकत के साथ घड़ियों की पैरवी करेगा, उनकी बकालत करेगा।

अपना नंबर आते ही मि. बॉचमैन ने सारा किस्सा कह सुनाया। वाकी सारे घड़ीसाजों को बैंगलुरु की घड़ियों की चिंता सही लगी। मामला सरकारी सिद्धांतों और नीति से जुड़ा था। इसलिए सरकारी अफसर ने बैंगलुरु के मि. बॉचमैन की बात सरकारी बही में लिखने से पहले वहाँ उपस्थित नेशनल मशीन टूल्स के चीफ इंजीनियर की राय माँगी। उस चीफ इंजीनियर ने भी अपने कारखाने में एक खास तरह का असंतोष पाया था। उसने अपनी राय देते हुए कहा—

“इनकी बात सही लगती है। ऑटोमैटिक व रोल्ड-गोल्ड घड़ियों को लेकर हमारी यूनिटों में विवाद खड़ा हुआ था। मैकेनिकों का कहना था कि महाँगी घड़ियों का निर्माण बद्द होना चाहिए।”

एन.एम.टी. के चीफ इंजीनियर की राय जानकर सरकारी अफसर ने मि. बॉचमैन का बयान दर्ज किया। बयान में लिखा गया था—

‘बैंगलुरु की घड़ियों को भय है कि समय पर शीघ्र ही सत्ता का अधिकार होनेवाला है। सरकारी कारखाना घड़ियों में भी कोई ऐसा पुर्जा बैठाने वाला है, जिससे घड़ियाँ सरकार की मज़बूती और मृड़ के मुताबिक चला करेंगी। घड़ियाँ मानती हैं कि समय पर सत्ता का यह अधिकार लोकतंत्र विरोधी बात है। उनका यह भी तर्क है कि सरकारी कारखाने द्वारा कीमती घड़ियों का निर्माण सरकार की अपनी नीति के खिलाफ है— इससे असमानता बढ़ती रहेगी, मिटेगी नहीं।’

बयान दर्ज हुआ, मामला महत्वपूर्ण समझा गया। सारा किस्सा टाइप कराकर संबंधित अफसरों व मंत्रियों के पास उसी बहत विशेष हरकारों के साथ भेज दिया गया। बैंगलुरु का घड़ीसाज यह सब देखता रहा। उससे अधिक देर चुप न रहा गया, वह बोला, “कागजी कार्रवाई और घड़ियों की कार्रवाई में जो फ़ार्क है, उसे देखिए साड़ब!”

सरकारी अफसर अपनी कार्रवाई का पक्का था। वह बिना उस तरफ ध्यान दिए अगली कार्रवाई के कागज ही पलट रहा था।



अध्याय 10

कागजों में अगला नंबर नाथद्वारा से आए घड़ीसाज का था। इसके बावजूद चौंक बैंगलुरु की घड़ियों ने एन.एम.टी. के कारखाने का उल्लंघन किया था, इसलिए सरकारी अफसर की राय थी कि एन.एम.टी. के इंचार्ज इंजीनियर का बयान पहले ले लिया जाए। इस बात पर सबकी सहमति लेकर एन.एम.टी. के इंजीनियर साहब से घड़ियों की हड्डताल का कारण या इसके बारे में किसी दूसरी जानकारी के बारे में पूछा गया।

इंजीनियर साहब सरकारी नौकर थे। अपनी नौकरी की चिंता उनकी सबसे बड़ी चिंता थी। वे जितना कुछ जानते थे या इस सभा में आने से पहले जितना कुछ जान सके थे, वह बताना भी वे खतरे



से खाली नहीं समझते थे। उन्होंने अपनी झिल्क दबाते शब्दों में माफ़ी माँग लेना ही ठीक समझा। वे बोले, “मैं तो सरकारी नौकर हूँ। आप मेरी राय न माँगें तो अच्छा है। मैं माफ़ी ही चाहूँगा।”

“नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। आप ही तो सरकारी कारखाने के इचारे हैं। आपकी बात पर किसे आपत्ति हो सकती है? फिर इस समिति को तो खुद सरकार ने सारे अधिकार दिए हैं। आप बिना किसी झिल्क के सारी बात साक बतलाएं।” सरकारी अफसर ने कहा। एन.एम.टी. के इंजीनियर साहब ने साहस बटोरा तथा बताया—

“एन.एम.टी. की एक ब्रांच सरकारी दफ्तरों की घड़ियों की मरम्मत का काम करती है। इसी ब्रांच में अभी थोड़े दिन पहले ही संसद की दो बड़ी दीवार-घड़ियाँ मरम्मत के लिए आई थीं। उनकी मरम्मत की जाने लगी, तो वे मैकेनिक से बोलीं—

‘तुम क्यों अपना समय गैंवाते हो और क्यों फिजूल में दिमाग खुशबू बरतते हो। संसद में सही समय की जरूरत किसे है? जिस बहस से जिस सदस्य का स्वार्थ जुड़ा रहता है या जिस प्रस्ताव से जिस मंत्री का मतलब होता है, केवल वहाँ वहाँ पर सही समय पर पहुँचता है। कई सदस्य तो सदन से नदारद ही रहते हैं।’

मैकेनिक संसद की घड़ी की बात सुनकर चौंका था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि संसद में ऐसा कैसे हो सकता है। हैरान मैकेनिक हवका-बवका रह गया था। उसे अबाक देखकर संसद की घड़ी ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा—

‘संसद में सारे लोग या तो समय पर तब पहुँचते हैं, जब बहस के विषय से उनका अपना स्वार्थ जुड़ा हो। अगर उनके स्वार्थ का कोई तकाज़ा न हो तो जरूरी नहीं है कि वे वहाँ पहुँचें ही। आपने अखबार में भी पढ़ा होगा कि जब संसद चल रही थी, तो कोई सदस्य मुख्य में फ़िल्म बना रहे थे या फिर कोई वहाँ बैठकर ऊँछ रहे थे।’

‘तो क्या हमारी संसद भी स्वार्थों से ऊपर नहीं उठी है? क्या संसद भी जनता के सुख-दुःख से नहीं जुड़ी है?’ मैकेनिक ने पूछा।

संसद की बीमार घड़ी ने दर्दभरी आवाज में कहा—‘मिस्त्री जी! आप अब भी ऐसा मानते हैं— यह आपकी महानता है। इस देश की

सारी जनता ही ऐसा मानती है, वह ऐसा मानती भी रहेगी। शायद हमें ऐसा ही मानती रहे। दरअसल अपनी परंपरागत जनता का विश्वास बहुत गहरा है, इस विश्वास की जड़ें बहुत गहरी हैं। यह विश्वास ही उसकी सबसे बड़ी ताकत है। इस विश्वास का टूट जाना अपने आप में बहुत बड़ी दुर्घटना होगी। संसद की घड़ियों ने हमेशा चाहा है कि वह विश्वास सदा बना रहे, लेकिन आज जनता और संसद के बीच फ़ासला बढ़ता जा रहा है। संसद सदस्यों के मन मिकुड़ते जा रहे हैं व उनके दिमाग मंकुचित होते जा रहे हैं। इससे संसद का गौरव घटा जै संसद की घड़ियों के लिए वह हालत काफ़ी चिंता की बात है और सारी घड़ियाँ बहुत निराश हो गई हैं।'

“इस घटना को अभी बहुत अधिक दिन नहीं हुए थे और इधर घड़ियों की हड़ताल हो गई। मैं समझता हूँ घड़ियों की हड़ताल का एक बड़ा कारण यह भी हो सकता है।”

एन.एम.टी. के इंचार्ज इंजीनियर ने अपनी बात खत्म करने पहले अपने बचाव में भी कुछ कह लेना काफ़ी जरूरी समझा। वह बोला—

“यह सूचना मुझे मरम्मत विभाग के मिस्ट्री ने दी है। उनने जो कुछ बताया, वही मैंने आपको बिना किसी जोड़-तोड़ के यूँ का यूँ बताया है। बड़े साहब को कुछ बुरा लगे तो कहना माफ़ करें।”

इंजीनियर साहब को अपने बचाव का पूरा ख्याल था और बड़े अफसरों को वे किसी भी कौमत पर नाराज़ नहीं होने देते थे। उनके इस बयान में भी उनकी यह सावधानी साफ़ झलकती थी। वे सुन किसी बात के लिए जबाबदार नहीं रहे थे। सारी बात उन्होंने मरम्मत विभाग के मैकेनिक पर थोप दी थी। इस बात को उन्होंने ज्ञाप देकर कहा था कि मिस्ट्री की बात को उन्होंने यूँ का यूँ ‘बिना किसी जोड़-तोड़ के’ कहा है। इस पर अगर बड़े साहब को कुछ बुरा लगे तो उन्होंने माफ़ी माँग ली थी। सीधे बड़े साहब से ही यूँ माफ़ी चाहने का एक और मतलब भी था— बड़े साहब के बड़प्पन और रोब के स्वीकार करते हुए उन्हें खुश करने का मतलब। इंजीनियर साहब इस बरस की नौकरी में मक्कन लगाने और मतलब हल करने की कला में सिद्धहस्त हो गए थे।



इंजीनियर साहब ने अपनी बात खत्म की। समिति के अफसर ने सरकारी बही में लिखा हुआ बयान सुनाना शुरू किया। बयान में लिखा था—

‘संसद भवन की घड़ियाँ अभी कुछ महीने पहले बीमार रहने लगी थीं। उनके पुलों में एक खास तरह की थकान पाई गई थी। बीमार घड़ियाँ निराश थीं। उनका कहना था कि संसद को जनता से जोड़े रहने के लिए वे सदैव सही समय देती रहीं, लेकिन संसदवालों को जनता के सुख-दुःख की, उसके भले-बुरे समय की फ़िक्र नहीं रही। जो लोग सत्ता में आए उन्होंने वादे भुला दिए। भारत की संसद की घड़ियाँ हताश हुई और उन्होंने सत्याग्रह कर दिया। घड़ियों की हड़ताल शुरू हो गई।’

संसद की घड़ियों का बयान सुनकर सभी घड़ीसाज प्रसन्न हुए। उनके सामने धीरे-धीरे यह बात साफ हो चली थी कि सारे देश की घड़ियों ने जनता की हिमायत का झांडा अपने हाथ में ले लिया है। घड़ीसाजों की उत्कृष्ट बही थी। वे उतारले थे कि बाकी शहरों के घड़ीसाज क्या खबर लाए हैं। उन सबने खुशी में झूमते हुए कहा कि अब आगे की बात भी सुन ली जाए।

समिति के अफसर ने आगे की कार्रवाई के लिए कागजों में आगे के नाम देखने शुरू किए। अभी तक नाथद्वारा, कानपुर, काठियावाड़ व सेह-लश्कर के घड़ीसाजों के बयान बाकी थे।

गण्याय 11



अब बारी थी, नाथद्वारा से आए हुए घड़ीसाज की। नाथद्वारा का घड़ीसाज बूढ़ा है। स्वभाव से धार्मिक है तथा अपने संतोष के लिए श्रीनाथ जी का प्रसाद हमेशा अपने साथ रखता है। दिल्ली आने पर भी समिति के सभी लोगों को उसने प्रसाद बांटा था और कहा था, 'जय श्रीनाथ जी!'

उसके माध्ये पर लगे तिलक से यह स्पष्ट हो ही गया था कि वह श्रीनाथ जी का भक्त है। वह कुछ कहता, उससे पहले ही बीकानेर के बाबा रामनाथ ने सवाल दाग दिया— "आपके यहाँ तो श्रीनाथ जी की कृपा से सभी कुछ ठीक ही चल रहा होगा!"

"नहीं रामनाथ जी! ठीक कहाँ चल रहा है। घड़ियों तो वहाँ भी चढ़ दें। घड़ियों ने यहाँ के महातों व पंडों को चेतावनी दी थी कि वे सभी तीर्थयात्रियों के साथ समान व्यवहार करें। बड़े आफसरों को लाइन तोड़कर सबसे पहले प्रवेश न दें। धना सेठों से पैसा लेकर उन्हें पौछे के दरवाजे से दर्शन न कराएं, लेकिन घड़ियों की चेतावनी धरी की धरी रह गई और यह सब ऐसे ही चलता रहा। घड़ियों का कहना था कि श्रीनाथ जी के दरवाजे पर भी ऊँच-नीच



चलती रही और इन महंतों को श्रीनाथ जी ने सद्बुद्धि नहीं दी, तो घड़ियों इसके लिए आदोलन करेंगी, सत्याग्रह करेंगी। हुआ भी ऐसा ही। महंतों व पंडों की नीयत सुधरी नहीं, भेदभाव, ऊँच-नीच चलता रहा और घड़ियों को सत्याग्रह शुरू करना पड़ा। समय का फेर है रामनाथ जी! श्रीनाथ जी भी अपने चाकर लोगों के झाँसे में आने लगे हैं।" थको आवाज में नाथद्वारा के घड़ीसाज ने अपनी बात खत्म की।

उसका बयान भी बाकायदा दर्ज हुआ। उसके बाद कानपुर के घड़ीसाज का नंबर था। उससे जब अपनी बात बताने को कहा गया तो उसने कहा—

"अब कौन से बयान बाकी रह गए सरकार। घड़ियों की हड्डताल का साफ़ कारण तो सामने आ ही गया है। इस पर भी अगर कोई अमल होता है, तो देश की जनता का खूब भला हो जाएगा। हम सब चाहेंगे कि घड़ियों की पीड़ा को समझा जाए। उनकी बातों पर गंभीरता से विचार करके सही समय को लौटाया जाए। यदि इसमें अब थोड़ी भी देर होती है, तो परिणाम बहुत गंभीर होंगे।"

कानपुर का घड़ीसाज तुरंत कोई कदम उठाने की बात पर जोर दे रहा था। उसकी बात सभी घड़ीसाजों को सही लगी थी और सबने उसका समर्थन किया था। काठियावाड़ के घड़ीसाज ने भी चेतावनी देते हुए कहा था—

"घड़ियों की माँगें पूरे देश की माँगें हैं। ये माँगें हर मामूली आदमी और उसके परिवार की माँगें हैं। आप फ्रौलन रपट तैयार कीजिए और 'अर्जेट' का लेबल लगाकर तुरंत उसे चलता कीजिए। सरकार को कहिए कि एक दिन की भी देर न करो।"

काठियावाड़ के घड़ीसाज की बात का भी सभी ने समर्थन किया था। लेह-लद्दाख के घड़ीसाज ने भी घड़ियों की राय में मिलाकर समता के राज की माँग की थी। उसने घड़ियों के साथ ही अपना दुखड़ा रखा था तथा कहा था कि पहाड़ पर रहनेवालों की कौन-खैर-खबर लेता है। पहाड़ के बीहड़ जीवन का वर्णन करते हुए वह

सरकार से अनुरोध कर रहा था कि समता का गज तुरंत कायम किया जाना चाहिए तथा समाज में सबको सामाजिक न्याय मिलना चाहिए। लेह-लद्धाख के घड़ीसाजू की बात भी इर्ज कर ली गई थी। पर्से समिति की एक राय देखकर सरकारी अफसर ने सारी कार्रवाई को लंबी रपट तैयार की थी।

घड़ीसाजों की इस गष्टीय कमेटी को यह लंबी रपट दूसरे दिन ही समय-मंत्री को भेट की जानी थी। समय अब भी लौटा नहीं था। इसलिए यह तय किया गया कि यह समारोह समय-भवन के 'शून्य कक्ष' में किया जाए। समारोह वहाँ हुआ तथा समय-मंत्री को पूरी रपट भेट की गई। रपट से बात साफ़ थी कि घड़ीयों की लड्डाई बुनियादी बातों पर टिकी है और इस लड्डाई में कोई सस्ता समझाना नहीं हो सकता। इस बात को ठीक से समझते हुए भी समय-मंत्री ने सरकारी तर्ज पर घड़ीयों से अपील की थी कि वे अपनी हड्डताल समाप्त कर दें तथा काम पर लौट आएं। समय-मंत्री ने आशा व्यक्त की कि घड़ीयाँ उनकी बात मान लेंगी। शून्य कक्ष में उपस्थित सभी पत्रकारों, अफसरों तथा राजनेताओं की सहानुभूति समय-मंत्री के साथ थी।

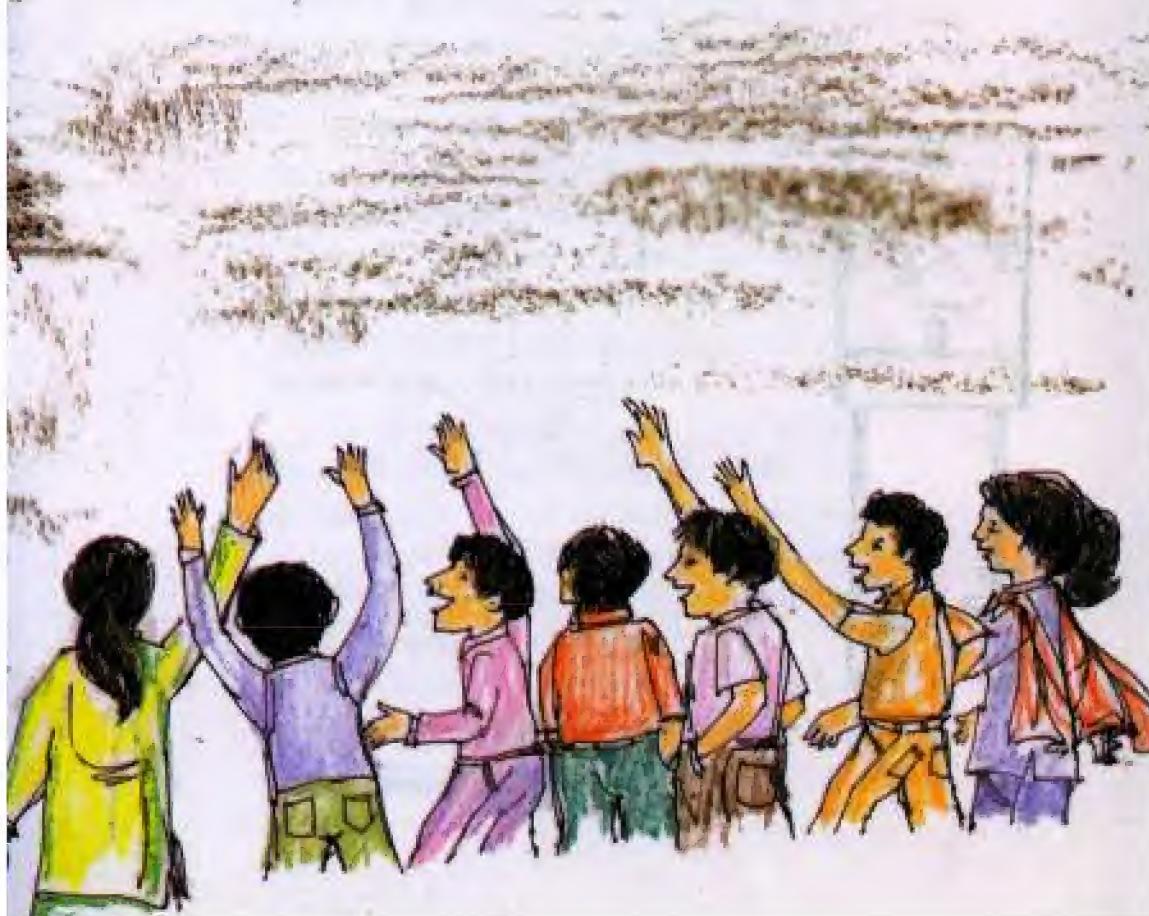
इस सक्षिप्त आयोजन के बाद घड़ीसाजों की इस गष्टीय कमेटी की राय पत्रकारों को बांट दी गई। पत्रकार पहले से ताक में बर्त थे। उत्तावले हो रहे थे। उन्होंने समारोह के बाद घड़ीसाजों को घेर लिया था। दूसरे सवेरे सारे देश के अखबार सिर्फ़ इसी खबर से भरे थे। कई घड़ीसाजों के फ़ोटो भी मुख्यपृष्ठ पर छपे थे। पूरे देश की जगता ने जान लिया था कि घड़ीयाँ हड्डताल पर क्यों हैं।

अध्याय 12



अखबारों में छपी खबर बच्चों ने भी पढ़ी थी। छोटू, मोटू व इनकी मित्रमंडली ने भी। सारे बच्चों को घड़ियों की बात पसंद थी, घड़ियों का तरीका पसंद था। बच्चों को अच्छा लगा कि घड़ियों ने उनकी बकालत की है। मास्टरों को अच्छा लगा कि घड़ियों ने उनकी बकालत की है। सभी गरीब लोगों को अच्छा लगा था कि घड़ियों ने दरिद्रनाशयण की इतनी तगड़ी पैरवी की है। समाजवादी लोग खुश थे कि घड़ियों ने समता के राज की बात रखी है और कम्युनिस्ट खुश थे कि घड़ियों ने हर गरीब तबके के लिए रोटी-कपड़ा-मकान जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने की पुरखोर माँग की है। सभी खुश थे।

सरकार भी नाराज नहीं थी। वह घड़ियों को मन ही मन ऐसे अहिंसक तथा शातिष्ठी आंदोलन के लिए धन्यवाद दे रही थी, लेकिन अभी तक सोच रही थी कि समय की यह एकता कैसे तोड़ी जाए और कैसे बीते समय को बापस लौटा कर लाया जाए।



सरकार सोच रही थी। उधर छोट-पौट की पूरी मंडली ने तय कर लिया था कि हम घड़ियों से दोस्ती करेंगे। गहरी दोस्ती करेंगे और घड़ियों के सपनों का भारत बनाने में जुट जाएँगे। घड़ियों की बात दरअसल भारत में आम जनता की बात है। उनको विश्वास है, वे एक मित्र के नाते घड़ियों से अपनी बात मनवा लेंगे।

इसी विश्वास के साथ एक सवेरे उगते सूरज से मिलकर यह मंडली समय को लौटाने चल दी थी। उगते हुए सूरज की आभा को कौन रोकेगा? छोट सीधा बड़े घटाघर के टीवर पर चढ़ गया था तथा पेंडुलम हिला बैठा था। उसने उस घड़ी को मिलाया था, चाबी भरी थी और घड़ी चल पड़ी थी। जैसे ही इस घड़ी के घटे की आवाज देश में गैंजी थी, वाकी घड़ियाँ भी चल पड़ी थीं। उगते हुए सूरज का साथ दिया था समय ने और बच्चों के विश्वास का आदर किया था समय ने। □□



62/घड़ियों की हड्डाल

लेखक-परिचय

रमेश थानवी

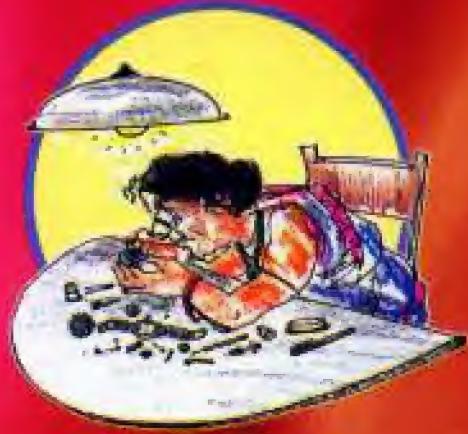
अगस्त 1945 में उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के कास्बे फलोदी, चिला जोधपुर में जन्मे रमेश थानवी ने जोधपुर विश्वविद्यालय से दर्जन शास्त्र में एम.ए. किया। फिर प्रतिपक्ष सामाजिक में संवादन सहबोग दिया। वर्ष 1976 में इन्होंने राजस्थान प्रौद्योगिकी संस्थान समिति के तत्वावधान में प्रौद्योगिकी के देश के पहले गन्ध संदर्भ केंद्र की स्थापना की और 20 वर्ष तक इसके संस्थापक निदेशक के रूप में कार्यरत रहे।

प्रौद्योगिकी का पहला यात्रा पद्धने रमेश जी 1976 में विषयनाम गण। 1980 में इंग्लैंड के साउथेंड विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिकी विभाग में सहयोगी फैलो के रूप में अध्यापन एवं प्रशिक्षण किया।

राजस्थान में महिला विकास, शिक्षाकर्मी, लोकजुटिकर्मी कई शिक्षा कार्यक्रमों में इन्होंने संचालन स्तर से ही सहभाग भागीदारी की। प्रौद्योगिकी में पुस्तक प्रकाशन, शिक्षा-सम्बन्धी सूचन एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में कई नवाचार भी किए।

अब तक इनकी बदलाव का अधिकार (लंबी कविता), दौड़ा-दौड़ा मन का दौड़ा, और मई व गुन गुन गुन (बहल गीत), नीली झील (कमलेश्वर की कहानी का लोकोपयोगी रूपांतर) तथा शिक्षा की परीक्षा पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें से बदलाव का अधिकार नी भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध है। इन्होंने सत्याजित गाय के सोने का किला का बोगला से अनुवाद किया है।

आजकल रमेश थानवी राजस्थान प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर में वरिष्ठ संलग्नकार के रूप में कार्यरत है तथा समकालीन शिक्षा चिंतन की मासिक पत्रिका अनौपचारिका के संपादक हैं। □



ભારતીય શાસ્ત્રીય અનુયાયી શિક્ષણ માન્યાનુભવ પરિષત
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

011-23337788-91-7350-6666-7